हर शख़्स अपने जिगरी दोस्त के दीन पर होता है लिहाज़ा तुम में से हर एक को यह गौर करना चाहिए कि वह किसे अपना जिगरी दोस्त बना रहा है (हदीस)

दोस्ती के पैमाने

मुअल्लिफ़

सय्यद मुहम्मद इकरामुल हक़ क़ादरी मिस्बाही उफ़िय अन्हु

नाशिर

नूरे ईमान इस्लामिक आर्गनाइज़ेशन

कुर्ला वेस्ट मुंबई

اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَّنْ يُّخَالِلُ۔

हरशख़्स अपने जिगरी दोस्त के दीन पर होता है लेहाज़ा तुम में से हर एक को ये ग़ौर करना चाहिए कि वह किसे अपना जिगरी दोस्त बना रहा है.

दोस्ती के पैमाने

मुअल्लिफ़
सय्यद इकरामुल हक़ क़ादरी मिस्बाही उफ़िय अनहु

-:नाशिर:-
नुरे ईमान इस्लामिक आर्गनाइज़ेशन
कुर्ला वेस्ट मुंबई

जुमला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं।

किताब का नाम : दोस्ती के पैमाने
मुअल्लिफ : सैय्यद मो0 इकरामुल हक़ क़ादरी मिस्बाही, सदर मोदर्रिस दारूल ऊलूम महबूबे सुबहानी, कुर्ला मुम्बई
मो0 9029249679
कम्पोज़िंग :मॉडर्न ग्राफिक्स 9096590530
नज़रे सानी : हज़रत अल्लाम मुफ़्ती ताहिर अहमद् मिस्बाही
सने तबाअत : 2019
तादाद् : 1100
कीमत : 30
सफहातः 56
मिलने का पता : नूरे ईमान ऑफ़िस दारूल ऊलूम महबूबे सुब्हानी, कुर्ला वेस्ट मुम्बई

शरफ़े इन्तेसाब

हज़रात अम्बियाए किराम अलैहिमुस सलात वत्तस्लीम

व

सिद्दीक़ीन, शुहदा, सालेहीन रिज़वानुल्लाह तआला अलैहिम

अजमईन

और

उन खुशनसीब मोमिनों के नाम जो अच्छी सोहबतें इख्तेयार करके दुनिया व आख़िरत में सआदत अन्दोज़ हुए।

फेहरिस्त

शुमार न०	फेहरिस्त ए मज़ामीन	सफ़्हा न०
1	शरफ़े इन्तेसाब	3
2	नेमतों का शुमार ना मुमकिन	6
3	दोस्ती के ग़लत पैमाने	7
4	ख़ुश नसीब मुसलमान	7
5	दोस्त की अहमियत	8
6	बेहतर दोस्त कौन	8
7	दोस्ती का शरअी पैमानाः	9
8	दोस्त के इन्तिख़ाब में एहतियात ज़रूरी है	11
9	हदीसे मज़कूर के तीन मआनी	11
10	अच्छे और बुरे दोस्त की मिसाल	14
11	अच्छा दोस्त इत्र फरोश की तरह है	15
12	बुरा हमनशीं लोहार की भट्टी के मानिन्द है	15
13	सालेहीन की सुहबत में रहने वाले नामुराद नहीं होते	16
14	ज़ाकेरीन बेहतरीन दोस्त हैं	20
15	सालेह की दोस्ती का उख़रवी फाइदा	20
16	बरोज़े हशर नफसी नफसी का आलम होगा	22
17	क़यामत में अल-हुब्बु लिल्लाह ही काम आएगा	23
18	हमें अपना मुहासबा करना चाहिए	24
19	एक सवाल का जवाब	25
20	अच्छी सुहबत की बरकतें	26
21	अल्लाह वालों की मज्लिस में रहें	27
22	बद नसीब इनसान	28
23	उक्बा बिन अबु मुईत की ख़बासत	29
24	अबै बिन ख़ल्फ़ का ख़बीस मुतालबा	30
25	हमारी मुशतरिका ज़िम्मे दारियाँ	31
26	ग़ैर मुस्लिमों को अपना हमराज़ बनाना हराम है	33
27	एक शुबहा का इज़ाला	34
28	ईमान व कुफ्र का तज़ाद	35
29	कुफ्फार से मुवालात व मुदाहनत नाजाइज़ है	37

30	सब से बड़ा अहमक़	38
31	क्या मुसलमान अक़वामे आलम से कट कर ज़िन्दगी गुज़ारें	39
32	तअल्लुक़ात की क़िस्में	40
33	मुवासात व मुआमलात का मफ़हूम	40
34	मुदारात का मतलब	40
35	कुफ्फारसे मुआमलात व मुवासात व मुदारात जाइज़ है	40
36	मुवालात का मतलब	43
37	सीरते सहाबा के ताबिन्दा नुकूश	44
38	मुदाहनत किसे कहते हैं	46
39	मुदाहनत की दोनों क़िस्में हराम हैं	47
40	बेग़ैरत मुसलमान	47
41	मुदाहनत के बजाए हिजरत करना फरज़ है	48
42	हज़रत सुहैब रूमी का जज़्बए ईमानी	50
43	हज़रते सिद्दीक़े अकबर की ग़ैरते ईमानी	51

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ مَنَّ عَلَیۡنَا بِالۡاَصۡدِقَآءِ الۡاَوۡفِیَاءِ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَوۡلِیۡنَا مُحَمَّدٍ سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ خَاتَمِ الۡاَنۡبِیَآءِ وَعَلٰی آلِہٖ وَاَصۡحَابِہِ الَّذِیۡنَ سَعِدَ بِصَدَاقَتِہِمُ الصُّلَحَآءُ۔

<u>निअमतों का शुमार ना मुमकिनः</u> अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने हम इनसानों को इस क़दर कसीर निअमतों से सरफराज़ फरमाया जिन्हें शुमार नहीं किया जासकता। कुरआन–ए– करीम में इरशाद फ़रमाता है।

وَاِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَۃَ اللّٰہِ لَا تُحۡصُوۡھَا ۔ اِنَّ اللّٰہَ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ۔

तरजमाः और अगर तुम अल्लाह की निअमतों को गिन्ना चाहो तो गिन नहीं सकते, बेशक अल्लाह ज़रूर बख्शने वाला मेहरबान है। परवरदिगारे आलम और उस के प्यारे हबीब हज़रत सैय्यदुना व मौलाना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच्ची मुहब्बत करने वाले सालेह और मुख़लिस दोस्त का हुसूल भी अल्लाह

अज्ज़ व जल्ल की अज़ीम तरीन निअमतों में से है।

दोस्ती के ग़लत पैमाने: मगर बद्क़िस्मती से मुस्लिम मुआशरे में जहाँ बहुत सी बेजा रसमें, मुतअद्दिद् बे एतिदालियाँ और तरह तरह की ख़ुराफात दर आई हैं वहीं हमारे यहाँ दोस्ती के पैमाने भी बदल चुके हैं। हमारे असलाफे किराम दोसतों के इन्तेख़ाब में बड़ी एहतियात बरत्ते थे। शरई ज़ावियों से परखने के बाद ही किसी का इनतेख़ाब अमल में आता था।

मगर आज हालात यह हैं कि बअज़ के नजदिक "ज़ाहिरी हुसन व जमाल'' ही दोसती का मेअयार है। ऐसे अशख़ास ख़ुबसुरत लोगों को देख कर पहली मुलाक़ात में उन से दोस्तियाँ क़ायम करने कि कोश्शि में लग जाते हैं। कुछ नादान सिर्फ ''हसब व नसब" को मेअयारे–ए– दोसती क़रार देते हैं।

यह नादान अपने गुमाने बातिल के मुताबिक बड़े ख़ानदान वालों की दोसती को अपने लिए बहुत बड़ी कामयाबी तसव्वुर करते हैं। इन लोगों के नज़दिक, बद् शकलों, फक़ीरों और अपने से बज़ाहिर कम हसब व नसब वालों के जज़बात व एहसासात और खुलुस व मुहब्बत की कोई क़द्र व क़ीमत नहीं होती। उनके मेअयार पर खरा न उतरपाने वाला उनके नज़दीक बे हैसियत है और यह कभी भी उसे एक मुख़्लिस दोस्त के तौर पर कुबुल नहीं करते। ऐसे जाहिलों के नज़दिक हुसने सीरत व किरदार की कोई क़ीमत नहीं होती।

ख़ुश नसीब मुसलमान: मगर अलहमदु लिल्लाह इस ज़मीन पर आज भी ऐसे खुश नसीब मुसलमान मौजुद हैं जिनके नज़दीक ''उमदा सीरत और पाकिज़ा औसाफ'' ही दोसती की कसौटी है। यह सआदतमन्द न

किसी के ज़ाहिरी हुसन व जमाल पर मरते हैं'' न किसी के माल व ज़र पर फरेफ़्ता होते हैं, बलकि यह हज़रात उन लोगों से दोसताना तअल्लुक़ात काएम करते हैं जो हुसने अखलाक़ से मुत्तसिफ और ज़ेवरे तक़्वा से आरासता होते हैं।

दोस्त की अहमियतः इनसान मदनिय्यत पसन्द है, यह अपनी फितरत के लिहाज़ से जंगलों और वीरानों में ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता, यह अपने ख़ानदान, क़बिले और इनसानी आबादी ही में रहकर ज़िन्दगी के मज़े लेना चाहता है। इस लिए कामियाब तरीन ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए दोस्तों का वजुद इत्ना ही ज़रूरी है जितना मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचने के लिए सवारी का हुसूल। क्यों कि दोस्त मसाएब व आलाम में दस्त गीरी करते हैं, खूशियों में उन की शिर्कत मुसर्रत अफज़ा होती है, उनकी कुर्बत उन्सियत का बाइस बनती है, उनकी प्यारी बातें मुसीबतें दूर कर देती हैं।

गर्ज़ यह कि दोस्तों के बग़ैर ज़िन्दगी एक बोझ सी मालूम हाती है और एक तवाना शख़्स भी दोस्त के बग़ैर ख़ुद को कमज़ोर महसूस करता है। इसलिए हर शख़्स किसी न किसी से दोस्ती का रिशता क़ायम करता है ताकि फरहत व मुसर्रत और रंज व ग़म में उसकी सुहबत व कुर्बतसे महजूज़ होसके।

बेहतर दोस्त कौनः मगर चुँकि हम मोमिन हैं इसलिए किसी से रिशता–ए–दोस्ती क़ायम करने से क़बल हमें यह देखना ज़रूरी है कि अल्लाह रब्बुल इज़्जत की किताब ''कुरआन मुक़द्दस'' ने किन–किन हज़रात को बेहतरीन दोस्त क़रार दिया है? कलामे

इलाही में ग़ौर करने से हम पर मुन्कशिफ होता है कि इस में दोसती के मेअयार पर भी मुकम्मल रौशनी डाली गयी है और क़यामत तक आने

वाले इनसानों के लिये ''बेहतरी दोस्त'' मुतआरफ कराए गये हैं। परवरदिगारे आलम अपने कलामे अज़ली में इरशाद फ़रामाता हैः

وَمَن يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُولَ فَأُولٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِينَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصَّالِحِيْنَ وَحَسُنَ أُولٰئِكَ رَفِيقًا ۔ ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيمًا ۔

سورہ نساء، آیت نمبر: ٦٩/٧٠

तरजमाः और जो अल्लाह और रसुल की इताअत करे तो वह उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने इनआम फ़रमाया है, जो अन्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालेहीन हैं। और यह किया ही उम्दा साथी हैं, यह अल्लाह की तरफ से फज़ल है और अल्लाह काफी जानने वाला है।

<u>दोस्ती का शरई पैमानाः</u> इस आयते करीमा में अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने न सिर्फ यह कि "हज़रात अंबियाए किराम, सिद्दीक़ीन इज़ाम, शुहदाए इसलाम" के साथ नेक व सालेह मुसलमानों को भी बेहतरीन दोस्त और अच्छा साथी क़रार दिया है, बल्कि इन नुफूसे कुदसिया की दोस्ती व कुर्बत को अपना फज़ले अज़ीम क़रार दिया है।

इस आयते मुबारका से बिला किसी तावील के वाज़िह हुआ कि अल्लाह रब्बुल आलमीन के नज़दीक दोसती की कसौटी न माल व ज़र है न हुस्न व जमाल, न हसब व नसब है न इलम व कमाल, बल्कि दोसती का मेअयार व पैमाना सिर्फ और सिर्फ "परहेज़गारी" है। और हक़ीक़ी परहेज़गार वही हैं जो ज़ाहिरन व बातिनन सच्चे हों, गुफ्तार व किरदार

दोनों में अच्छे हों। शरिअते मुतह्हरा ने ऐसे नेक और सच्चे लागों की सुहबत इख़्तियार करने का हुक्म दिया है। फ़रमाने इलाही हैः

يَاأَيُّهَاالَّذِينَ امَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَ كُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ۔

سورۂ توبہ، آیت نمبر: ۱۱۹

तरजमाः ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ होजाओ।

इस आयते मुबारका में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने अपने मोमिन बन्दों से दो मुतालबे किये हैं। एक यह कि वह तक़्वा इख़्तियार करें, दुसरा यह कि दोस्ती के लिये नेक और सच्चे लोगों का इनतिख़ाब करें, जो खुद मत्तक़ी न हो वह फ़ासिक़ व फाजिर होकर अज़ाबे नार का हक़दार बन सकता है और अगर परहेज़गार होकर फासिक़ों, गुमराहों या ग़लत लोगों कि सुहबत इख्तायर करे तो ईमान व तक़्वा के बाद गुमराही के दल–दल में फंस सकता है।

आयाते क़ुरआनिया से जब यह साबित हो गया कि शरिअ़ते इसलामिया के नजदीक दोस्ती का मेअयार सिर्फ तक़्वा व परहेज़गारी है न कि हुसन व जमाल और माल व दौलत, तो हर फ़रदे मोमिन को दोस्तियाँ क़ायम करने के सिलसिले में निहायत चाक़ व चौबन्द रहने की ज़रूरत है, ताकि फुस्साक़ व फुज्जार और बदकिर्दार व बे अमल दोसतों के चक्कर में फंस कर दुनिया व आख़िरत के ख़सारे से दोचार न हो।

इस बारें में हिकमत व दानाई के मालिक कौनैन के दाता हुज़ुर ताजदारे अरब व अजम ﷺ के गिराँ क़दर इरशादात मौजूद हैं। अगर हम उन्हें हिर्ज़े जाँ बनाकर उनके अनवार से मुस्तफीद व मुस्तनीर होते हुए दोसतों का इनतेखाब करें तो हमें अल्लाह व रसुल से सच्ची मुहब्बत करने वाली ऐसी अज़ीमुश्शान शख़्सियतें मुयस्सर आऐंगी जिनकी सुहबत–ए–पुरनुर से हमें दुनिया व आख़िरत दोनों में सआ़दत अन्दोज़ होने का शर्फ हासिल होगा।

<u>दोस्त के इनतेख़ाब में एहतियात जरूरीः</u> इस सिलसिले में चन्द हदीसों के खुबसुरत महकते गुल दस्ते पेशे ख़िदमत हैं, पढ़ें और मशामे जाँ को मुअ़त्तर करें।

हज़रत सय्यदुना अबु हुरैरा से मरवी है कि आक़ाए दोआ़लम ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

اَلْمَرْءُ عَلٰى دِيْنِ خَلِيْلِهٖ فَلْيَنْظُرْ اَحَدُكُمْ مَنْ يُّخَالِلُ۔

तर्जमाः हर शख़्स अपने जिगरी दोसत के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को यह ग़ौर करना चाहिए कि वह किसे अपना जिगरी दोस्त बना रहा है?

<u>पहला मानाः</u> इस हदीसे पाक का एक माना यह बयान किया गाया किः "किसी से दोस्ती और क़लबी तअ़ल्लुक़ क़ायम करना दीन की तरह है, जिस तरह दीन के इनतेख़ाब में ग़ौर व ख़ौज़ किया जाता है। मुकम्मल छान–बीन और तफतीश व तहक़ीक़ के बाद ही उसे इख़्तियार किया जाता है इसी तरह दोस्त व अहबाब मुनतख़ब करने में कामिल ग़ौर व फिक्र से काम लेना चाहिए। शरअ़ी ज़ावियों से परखने के बाद ही किसी

को अपना दोस्त, यार, हम–दम हमराज़ मुनतख़ब करना चाहिए, क्यों कि जिस तरह हर शख़्स पर अपने दीन के तक़ाज़े पूरे कनरे लाज़िम होते हैं, इसी तरह हर सच्चे दोसत के लिये दोस्ती के तक़ाज़े पुरे करने ज़रूरी होते हैं।

इसे यूँ भी कह सकते हैं कि जिस तरह किसी दीनदार शख़्स से उसका दीन जुदा नहीं होता, हमा वक़्त उसके साथ रहता है, युँ ही इनसान से उसके सच्चे दोसत जुदा नहीं होते बल्कि साया बनकर उसके साथ रहते हैं। इसी लिये हुजूर ﷺ ने फ़रमाया कि "इनसान अपने ख़लील व सादिक दोस्त के दीन पर होता है।

<u>दुसरा मानाः</u> इसका दुसरा माना यह बयान किया गया है कि जिस तरह दीनदार शख़्स हर हाल में अपने दीन की हिमायत व हिफ़ाज़त करता है। न किसी वक्त उसे बेयार व मददगार छोड़ता है और न किसी हुक्म में उस्की मुख़ालिफ़त करता है। इसी तरह मुख़लिस दोस्त को बहर–हाल अपने सच्चे यार की हिमायत व हिफाज़त करनी पड़ती है, हर मुआमले में उसकी तरफ़दारी करना आहिस्ता–आहिस्ता उस्का शेवा बनजाता है, ख़्वाह वह हक़ पर हो या बातिल पर।

क्या आप ने न देखा कि लोग किस तरह अपने दोस्तों के लिये सब कुछ करने बल्कि मर–मिटने पर आमादा होजाते हैं, उन्की मुहब्बत में दिवाने होकर अपने माँ–बाप और भाई बहन से बग़ावत कर बैठते हैं और उन्के हुकूक़ सल्ब करके फ़ासिक व फाजिर दोस्तों के हुकूक़ अदा किये जाते हैं। इसी लिये आक़ाए दो आलम ﷺ ने फ़रमाया कि "खूब

ग़ौर व फ़िक्र के बाद ही किसी को दिल में जगह दो"

कहीं ऐसा न हो कि उस्की बेजा हिमायत व नुसरत तुम्हें हलाकत में डाल दे, क्यों कि ग़लत दोस्तों की सुहबत व महब्बत अकसर व बेशतर हलाकत खेज़ साबित होती है। बन्दा अपने उस दोस्त की खुशी के लिये ख़िलाफ़े शरअ़ काम करने से भी दरेग नहीं करता, बल्कि कभी–कभी इस क़िस्म की दोसतियाँ सिर्फ हराम कारियों में ही नहीं, बल्कि कुफ्र–व–शिर्क के मुआमलात में भी मुबतला करदेती हैं।

मौजुदा दौर के बअज़ नाम निहाद मुस्लिम सियासी लीडरों और कुछ जाहिल रौशन ख़्यालों के अहवाल व कवाइफ किसी भी साहिबे बसीरत पर मख़्फी नहीं हैं, यह लोग कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन को खुश करने की गर्ज़ से न सिर्फ यह कि बुतों कि ताज़ीम व तौक़ीर करते, बल्कि मन्दिरों में जाकर बाज़ाब्ता बुत परसती करके, हैं और विडियोज बनाकर निहायत ढटाई के साथ उन्हें शेयर भी करते हैं। العياذ بالله

<u>***तिसरा मानाः***</u> इस हदीस का तिसरा माना यह बयान किया गया कि यहाँ "दीन" तरीके के माना में है। और हदीसे पाक का मफहूम यह है कि दोस्त को उसके दोस्त के तरीके पर कयास किया जाता है। जिस शख़्स की जैसी संगत होती है उसके बारे में लोग वैसा ही गुमान रखते हैं। और यह हमारा मशाहिदा भी है, क्यों कि गाली ग्लोज करने वालों के दोस्तों को बदतमीज़, शराबियों के दोस्तों को शराबी, चोर के दोस्तों को चोर, जूवारियों के दोस्तों को जुवारी और बेनमाजियों के दोस्तों को बेनमाज़ी ही समझा जाता है। ऐसे ग़ाफिल लोगों को कोई भी ग़ैरतमन्द

इनसान नेक व सालेह और साहिबे गुफ्तार व किर्दार नहीं समझता।

अच्छे और बुरे दोस्त की मिसालः सहाबीए रसुल हज़रत सय्येदुना अबु मुसा अशअरी से रिवायत है कि अल्लाह के रसुल ﷺ ने अच्छे और बुरे दोसत की मिसाल बयान करते हुए इरशाद फरमायाः

مَثَلُ الْجَلِيْسِ الصَّالِحِ وَالسُّوءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيْرِ فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا اَنْ يُّحْذِيَكَ وَإِمَّا اَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ وَإِمَّا اَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً وَنَافِخُ الْكِيْرِ إِمَّا اَنْ يُّحْرِقَ ثِيَابَكَ وَإِمَّا اَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا خَبِيثَةً۔

(الصحیح للامام البخاری، کتاب الذبائح باب المسک، رقم الحدیث ۵۵۳۴ والصحیح للامام مسلم باب استحباب مجالسۃ الصالحین ومجانبۃ قرناء السوء، رقم الحدیث ۶۸۶۰ ومشکوٰۃ المصابیح، ص ۴۲۶)

तरजमा : अच्छे दोस्त की मिसाल मुश्क़ बेचने वाले (अत्र फरोश) की तरह है और बुरे दोसत की मिसाल भट्टी में फुँक मारने वाले (लोहार) की तरह है। मुश्क़ बेचने वाला या तो खुद से तुम्हें कुछ दे देगा या कीमत दे कर तुम उस से कुछ ख़रीद लोगे या फिर तुम्हें उसकी अच्छी खुशबू मिलेगी। भट्टी में फुँक मारने वाला लोहार या तो तुम्हारे कपड़े जला देगा या तो तुम उसकी बदबू महसूस करते रहोगे। इस तशबीह की वज़ाहत करते हुए उलमाए किराम फरमाते हैं कि "अत्र फरोश की दोसती बहर सुरत सूदमन्द होती है। अत्तार के पास बैठने वाले खुश्बू से महरूम नही होते। अगर अत्तार सख़ी है तो बतौर हद्या के कुछ न कुछ अत्र अता कर ही देगा। अगर वह सख़ी नहीं लेकिन उसकी सुहबत में रहने वाला लेने का ज़ज़्बाए सादिक़ रखता है तो वह जरूर उस से कुछ खुशबु ख़रीद लेगा और अगर दोनों में से किसी के पास ज़ज़्बा न हो, न अत्तार के पास देने का ज़ज़्बा हो और न दोस्त को

ख़रीदने का शौक़ हो, तब भी उस्की सुहबत नुक्सान दह नहीं है। क्यों कि ख़ुश्बूओं पर न पहरे बिठाए जा सकते हैं और न उन्हें मुक़य्यद किया जासकता है। लिहाज़ा अत्तार के पास बैठने वाला बहर हाल खुश्बू पाएगा।

अच्छा दोस्त अत्र फरोश की तरह है: ज़ाहिद व पारसा अश्ख़ास की सुहबत व दोस्ती भी बहर सुरत फ़ायेदा मन्द साबित होती है। उन से क़लबी तअल्लुक़ क़ायम करने वाले कभी भी महरूम नहीं रहते। या तो यह हज़रात अज़खुद अपने दोसतों को परहेज़गारी के महकते गुल–दसते अता कर देते हैं या इनकी सोहबते बाफैज़ इख़्तियार करने वाले बाज़ौक अफराद इनसे ज़ुहदो व तक़वा का अत्र कशीद कर नेक व सालेह बनकर, अपनी खुशबूदार सीरत से पुरे आलम को महकाते हैं।

अगर यह दोनों सुरतें मुतहक़्क़क़ न हों तब भी नेकों की सुहबत व कुर्बत में रहने वाले उनके आमाले सालेहा की बरकतों और खुश्बूओं से महरूम नहीं रहते, बल्कि इन्हें भी परवरदिगारे आलम के फ़ज़्ल व करम का वाफिर हिस्सा मिलता है।

इस्के बर्ख़िलाफ लोहार की भट्टी के पास बैठने वालों के हाथों में ख़ैबत व खुसरान, मशक़्क़त व दुशवारी और तअ़फ़्फ़ुन व बद्बू के सिवा कुछ नहीं आता। लोहार की भट्टी से उठने वाली चिंगारियां या तो उनका लिबास जला कर तबाह कर देती हैं या उसे दाग़दार बना देती हैं और अगर यह न हो तो भट्टी की बद्बू ज़रूर उसे तकलीफ पहुँचाती है, क्यों कि बद्बुओं को फ़ैलने से रोका नहीं जासकता।

बुरा हमनशीं भट्टी के मानिन्द है: बुरे दोस्त लोहार की भट्टी के

मानिन्द हैं ये या तो आप के लिबासे तकवा को जला कर राख कर देंगे और अगर बफज़ले इलाही ऐसा न हुआ तो उन्की बदआमालियों की नुहुसत ज़रूर आप तक पहुँचेगी और आपके लिए उनके फिस्क व फुजुर और आमाले क़बीहा की बद्बू से बचना निहायत मुश्किल होगा।

लिहाज़ा जो लोग अल्लाह के बाग़ी व नाफ़रमान हैं, मुज्रिम व सरकश हैं, फिस्क व फुजूर में डुबे हुए हैं और बद आमालियों के शिकार हैं हमें उन लोगों की सुहबत में बैठने, उन्की मज्लिस में जाने और उनकी बातें सुन्ने से इस तरह परहेज़ करना चाहिये जिस तरह हम दौराने इलाज नुक्सान दह चीज़ों से गुरेज़ करते हैं वरना हमारे किरदार की पोशाक और तक़वा का लिबास महफूज़ नही रह सकेगा और उन्के गुनाहों की नुहूसत हमें घेर कर कहीं का नहीं छोड़ेगी।

जब कि सालिहिन व मुत्तक़ीन की सुहबते सालेह से हम बेशुमार रहमतों और बरकतों से लुत्फ अन्दोज़ होसकते हैं, बल्कि ऐन मुम्किन है कि रब तआ़ला उन्हीं के तुफैल मआफी का परवाना अता फ़रमा दे। तरग़ीब के लिये चन्द रिवायतें पेश की जारही हैं। पढ़ें, अमल करें और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के बे पायाँ करम व रहमत के हक़दार बनें।

<u>सालिहीन की सुहबत में रहने वाले नामुराद नही होते</u>

हज़रत सय्येदुना इमाम मुस्लिम, हज़रत सय्यदिना अबु हुरैरा से रिवायत करते हैं कि ग़ैब–दाँ नबी ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः

"اِنَّ لِلّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى مَلَائِكَةً سَيَّارَةً فُضُلًا يَتَتَبَّعُونَ مَجَالِسَ الذِّكْرِ فَاِذَا وَجَدُوا مَجْلِسًا فِيْهِ

ذِكْرٌ قَعَدُوا مَعَهُم وَحَفَّ بَعضُهُمْ بَعْضًا بِأَجْنِحَتِهِمْ حَتّٰى يَمْلَئُوا مَا بَيْنَهُمْ وَبَينَ السَّمَاءِ الدُّنْيَا فَإِذَا تَفَرَّقُوا عَرَجُوا وَصَعِدُوا إِلَى السَّمَاءِ۔

قَالَ فَيَسْئَلُهُمُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ وَهُوَ اَعْلَمُ بِهِمْ مِنْ اَيْنَ جِئْتُمْ فَيَقُوْلُوْنَ: جِئْنَا مِنْ عِنْدِ عِبَادٍ لَّكَ فِي الْاَرْضِ يُسَبِّحُوْنَكَ وَيُكَبِّرُوْنَكَ وَيُهَلِّلُوْنَكَ وَيَحْمَدُوْنَكَ وَيَسْئَلُوْنَكَ۔

قَالَ: وَمَاذَا يَسْأَلُوْنِيْ؟ قَالُوا: يَسْأَلُوْنَكَ جَنَّتَكَ۔ قَالَ: وَهَلْ رَاَوْا جَنَّتِيْ؟ قَالُوا: لَا اَيْ رَبِّ۔ قَالَ: فَكَيْفَ لَوْ رَاَوْا جَنَّتِيْ! قَالُوا: وَيَسْتَجِيْرُوْنَكَ۔ قَالَ: وَمِمَّ يَسْتَجِيْرُوْنَنِيْ؟ قَالُوا: مِنْ نَارِكَ يَا رَبِّ۔ قَالَ: وَهَلْ رَاَوْا نَارِيْ؟ قَالُوا لَا قَالَ: فَكَيْفَ لَوْ رَاَوْا نَارِيْ!

قَالُوا: وَيَسْتَغْفِرُوْنَكَ۔ قَالَ: فَيَقُوْلُ: قَدْ غَفَرْتُ لَهُمْ فَاَعْطَيْتُهُمْ مَا سَاَلُوْا وَاَجَرْتُهُمْ مِمَّا اسْتَجَارُوْا۔ قَالَ فَيَقُوْلُوْنَ رَبِّ فِيْهِمْ فُلَانٌ عَبْدٌ خَطَّاءٌ اِنَّمَا مَرَّ فَجَلَسَ مَعَهُمْ۔ قَالَ: فَيَقُوْلُ: وَلَهٗ غَفَرْتُ هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ۔

(الصحیح للامام مسلم بباب فضل مجالس الذکر، رقم الحدیث ۷۰۱۵، مشکوٰۃ المصابیح، ص:۱۹۷)

<u>मफ़हूमे हदीसः</u>अल्लाह अज़्ज़ व जल के सयाहत करने वाले कुछ फरिश्ते ज़मीन में ज़िक्रे इलाही की मज्लिसें तलाश करते रहते हैं, जब उन्हें ज़िक्रे इलाही की कोई मज्लिस मिलजाती है तो अहले ज़िक्र के साथ उस महफिल में शरीक होजाते हैं और अपने नूरानी परों से उन्हें ढ़ांप लेते हैं यहाँ तक कि ज़मीन से आसमान तक की फिज़ा भरदेते हैं, जब अहले महफ़िल फारिग़ होकर एक दूसरे से जुदा होजाते हैं तो यह फरिश्ते बुलन्द होकर आसमान का क़स्द करते हैं और रब्बे करीम की

बारगाह में पहुँच जाते हैं।

रब तबारक व तआ़ला सब कुछ जानने के बावजुद उनसे पुछता है। ऐ मेरे फरिशतो! तुम कहाँ से होकर आए हो? वह अ़र्ज करते हैंः ऐ हमारे रब! हम! ज़मीन में बसने वाले तेरे ऐसे बन्दों के पास होकर आए हैं जो महफिलें सजाकर तेरी पाकी बयान कर रहे थे, तेरी किब्रियाई का एलान कर रहे थे, तेरी तहलील व हम्द में मशगूल थे और तुझसे सवाल कर रहे थे।

यह सुनकर अल्लाह तआ़ला उनसे इरशाद फ़रमाता हैः मेरे बन्दे मुझसे क्या माँग रहे थे? फरिशते कहते हैंः बारे इलाह! वह तुझसे तेरी जन्नत का सवाल कर रहे थे, अल्लाह फ़रमाता हैः क्या मेरे बन्दों ने मेरी जन्नत देखी है? फरिशते कहते हैंः ए मेरे रब! उन्हों ने जन्नत देखी नहीं, उस पर अल्लाह फ़रमाता है कि अगर वह जन्नत के हुस्न व जमाल को देख लेते तो उनके सवाल करने का आ़लम दीदनी होता।

फ़रिशते अर्ज़ करते हैंः ए अल्लाह वह बन्दे तेरी पनाह माँग रहे थे। अल्लाह कहता है वह किस चीज़ से मेरी पनाह माँग रहे थे?" फरिशते जवाबन अर्ज़ करते हैंः "वह तेरी दोज़ख से पनाह माँग रहे थे ए हमारे रब" अल्लाह फ़रमाता हैः "क्या उन्हों ने मेरी दोज़ख को देखा है?" वह कहते हैंः "नहीं देखा।" रब्बे करीम फ़रमाता है "अगर वह मेरी दोज़ख को देख लेते तो उनके पनाह माँगने का मनज़र कुछ और होता।"

उसके बाद फ़रिशते अर्ज़ करते हैंः ऐ हमारे रब! "वह तुझसे बख़शिश की भीक माँग रहे थे" अल्लाह तआला यह सुनकर फ़रमाता है। सुनो मैं

ने उन सबकी मग़्फिरत फ़रमादी, उन्हें वह सब कुछ दिया जो उन्हों ने माँगा और उन्हें उस दोज़ख से पनाह दी जिस से उन्हों ने पनाह माँगी। फरिशते अर्ज़ करते हैंः ऐ अल्लाह! उन में फलां बन्दा भी था जो बड़ा गुनाहगार है, वह तेरा ज़िक्र करने की गर्ज़ से नहीं आया था, बल्कि वहाँ से गुज़र रहा था तो (किसी और गर्ज़ से) ज़िकर करने वालों के साथ महफ़िले ज़िक्र में शरीक हो गया।

यह सुनकर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता हैः "मैं ने उसे भी माफ कर दिया क्यों कि वह ऐसे लोग हैं कि उनकी सुहबत में बैठने वाले नाकाम व नामुराद नहीं होते।

ये हदीसे पाक हमें अल्लाह वालों की दोस्ती और उन्की सुहबत इख़्तियार करने की तरग़ीब दे रही है और इस हक़ीक़त की सराहत कर रही है कि अल्लाह वालों की दोस्ती रब्बे करीम की रज़ा का अज़ीमुश्शान वसीला है। इस हदीसे पाक का आख़िरी टुकड़ा हम जैसे गुनाह गारों के दिलों में उम्मीद का चिराग़ रौशन कर रहा है कि रब्बुल इज़्ज़त की तसबीह व तहलील और उसकी हम्द व सना करने वालों की सुहबत में बैठने वाले भी ख़ुल्दे बरीं के हक़दार होजाते हैं।

जब बिला क़स्द व इरादा जिक्रे इलाही की मज्लिस में आने वालों पर रहमते इलाही झमा–झम बरसती है और गुनाहों की ग़लाज़त से उन्हें पाक करके जन्नत का हक़दार बनादेती है तो वह लोग किस क़द्र रहमते खुदावन्दी से माला–माल होते होंगे जो क़स्द व इरादा के साथ, पैकरे इख़्लास बनकर मजालिसे ज़िक्र में शिर्कत करते हों। और फिर उन नेक बख्तों की शान किस क़द्र बुलन्द होगी जो बज़ाते ख़ुद इस

तरह की नुरानी व इरफ़ानी महाफ़िल व मजालिस मुनअकिद करें और ज़िक्रे इलाही का खुब खुब एहतेमाम करें।

<u>ज़ाक़ीन बेहतरीन दोस्त हैं:</u> इसलिये दोस्ताना तअ़ल्लुक़ात उनसे न कायम किये जायें जो ज़िक्र–ए– इलाही से ग़ाफिल हों, आमाले सालेहा से दुर हों और फ़िस्क व फुजूर की अंधरों में गुम होकर जानवरों से बदतर जिन्दगी गुजार रहे हों, बल्कि दोस्ताना तअल्लुक़ात उन पाक बाज़, नेक सीरत और सालेह मुसलमानों से क़ायम किये जायें जो फ़राइज़ व वाजिबात पर अमल करते हों, हराम कारियों से दूर व नुफुर हों, जिनकी पेशानियों में सजदों की तड़प हो, जिन्के दिल ख़शियते इलाही से आबाद हों, जिनकी ज़ुबाने ज़िक्रे हक से तर हों और जिन्की आँखें ख़ौफे ख़ुदा से अशकबार रहती हों, क्यों कि ऐसे लोगों की दोस्ती दुनिया में शादकाम और आख़िरत में सुरखुरू करती है और ऐसे अज़ीमुश्शान दोस्त बरोज़े क़यामत रब्बे ज़ुल–जलाल के ग़ज़ब व जलाल और अज़ाबे नार से बचाने मे मददगार व मुआविन साबित होते हैं।

<u>सालेह की दोस्ती का उख़रवी फाइदा</u>: नेक दोस्तों का उखरवी फायदा ऐसा शानदार है कि इनसान इस्का हक़ीक़ी तसव्वुर भी नहीं करसकता, सालेह दोस्ती की मनफ़अत का अन्दाज़ा मुन्दर्जा ज़ेल हदीसे पाक से लगाया जासकता है।

हज़रत सय्येदुना इमाम नसाई सहाबीये रसूल हज़रत सय्येदुना अबू सईद ख़ुद्री से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के हबीब दो आलम के तबीब हुज़ूर ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं :

مَا مُجَادَلَةُ اَحَدِكُمْ فِي الْحَقِّ يَكُونُ لَهُ فِي الدُّنْيَا بِأَشَدَّ مُجَادَلَةً مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لِرَبِّهِمْ فِي

اِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ اُدْخِلُوا النَّارَ۔ قَالَ: يَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا! اِخْوَانُنَا كَانُوْا يُصَلُّوْنَ مَعَنَا وَيَصُوْمُوْنَ مَعَنَا وَيَحُجُّوْنَ مَعَنَا فَاَدْخَلْتَهُمُ النَّارَ۔

قَالَ: فَيَقُوْلُ: اذْهَبُوْا فَاَخْرِجُوْا مَنْ عَرَفْتُمْ مِنْهُمْ۔ قَالَ: فَيَاْتُوْنَهُمْ فَيَعْرِفُوْنَهُمْ بِصُوَرِهِمْ۔ فَمِنْهُمْ مَنْ اَخَذَتْهُ النَّارُ اِلٰى اَنْصَافِ سَاقَيْهِ وَمِنْهُمْ مَنْ اَخَذَتْهُ اِلٰى كَعْبَيْهِ۔ فَيُخْرِجُوْنَهُمْ۔ فَيَقُوْلُوْنَ: رَبَّنَا! قَدْ اَخْرَجْنَا مَنْ اَمَرْتَنَا۔

قَالَ: وَيَقُوْلُ اَخْرِجُوْا مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ وَزْنُ دِيْنَارٍ مِنَ الْاِيْمَانِ۔ ثُمَّ قَالَ: مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ وَزْنُ نِصْفِ دِيْنَارٍ حَتّٰى يَقُوْلَ مَنْ كَانَ فِيْ قَلْبِهٖ وَزْنُ ذَرَّةٍ۔ قَالَ اَبُوْ سَعِيْدٍ: فَمَنْ لَمْ يُصَدِّقْ فَلْيَقْرَاْ هٰذِهِ الْاٰيَةَ: اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ۔ اِلٰى: (عَظِيْمًا)

(السنن للامام النسائی، باب زیادۃ الایمان، رقم الحدیث: ۵۰۲۷)

<u>मफ़हूमे हदीस:</u> हक़ के सिलसिले में दुनिया में किसी शख़्स से तुम्हारी होने वाली बहस व तकरार मोमिनीन के उस मुजादिला से कम नहीं है जो वह अपने रब से अपने उन दीनी भाइयों के सिलसिले में करेंगे जिन्हें दोज़ख़ में दाख़िल करदिया गया होगा। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया: वह मोमिनीन बरोज़े क़यामत अपने रब से कहेंगे: ये हमारे दीनी भाई हैं, ये हमारे साथ नमाज़ें पढ़ते थे, हमारे साथ रोज़े रखते थे और ये हमारे साथ हज किया करते थे। लेकिन तू ने इन्हें जहन्नम में दाख़िल फ़रमादिया है। हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया: यह सुनकर अल्लाह फ़रमाएगा: जाओ उनमें से जिन्हें जानते हो उन्हें दोज़ख़ से

निकाल लो। हुजूर ﷺ फ़रमाते हैं कि वह लोग यह मुज़्दा– ए–जांफिज़ा सुनकर दोज़ख़ में जायेंगे और उनके चेहरों से उन्हें पहचान लेंगे, उनका हाल यह होगा कि दोज़ख़ की आग उनमें से बअज़ की निस्फ पिंडली तक पहुँच चुकी होगी और बअज़ के टख्नों तक। तो यह लोग उन्हें दोज़ख़ से बाहर निकालेंगे, फिर अर्ज़ करेंगेः ए हमारे रब हम ने उन्हें निकाल लिया जिनके निकालने का तू ने हमें हुक्म दिया था।

हुजूर ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा, अब उन्हें भी निकाल लो जिनके दिलों में एक दीनार के बराबर भी ईमान रहा हो, फिर इरशाद फ़रमाएगा कि उन्हें भी निकाल लो जिनके दिलों में दुनिया में निस्फ़ दीनार के बराबर ईमान रहा हो, दरया– ए–रहमत में जोश आने के बाद इर्शाद फ़रमायेगा कि उन्हें भी दोजख से आज़ाद करदो जिनके दिलों में दुनिया में एक ज़र्रे के बराबर भी ईमान रहा हो।

<u>बरोज़े महशर नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगाः</u> ग़ौर फ़रमायें! जिस दिन नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगा, हर तरफ अफ़्रातफ़्री का माहौल होगा, कोई किसी का पुर्साने हाल न होगा, दुनिया की सारी मुहब्बतें, दोसतियाँ, याराने और तअल्लुक़ात दम तोड़ती नज़र आयेंगी हत्ता कि वालिदैन अपने बच्चों से, औलाद अपने माँ–बाप से, भाई अपने भाई से और तमाम इनसान एक दूसरे से बेपर्वाह होकर भाग रहे होंगे।

ये देखिये! हमारे रब अल्लाह ने किया फ़रमायाः

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاخَّةُ. يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ لِكُلِّ

امْرِءٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيْهِ۔

(سورہ عبس، آیت نمبر: ۳۳تا۳۷)

तरजमाः पस जब कानों को बहरा कर देने वाली (क़यामत) आजाऐगी, उस दिन हर शख़्स अपने भाई से भागेगा, और अपने माँ बाप से, और अपनी बीवी और बेटों से, उस दिन हर शख्स को अपनी पड़ी होगी और उस्की हालत उसे दूसरों से बेपर्वाह कर देगी।

<u>क़यामत में अल-हुब्बु लिल्लाह ही काम आयेगाः</u> ऐसे जाँगुदाज़ और दिल–दोज़ वक़्त में सिर्फ़ वह दोस्तीयाँ और मुहब्बतें काम देंगी जो दुनिया में ईमान व तक़वा की बुनियाद पर क़ायम की गई होंगी और गुनाहगार के हक़ में उनके सालेह दोस्तों की न सिर्फ़ यह किशफाअत कुबूल की जायेगी, बल्कि मिन– जानिबिल्लाह उनकी नाज बर्दारी की जायेगी और उन्की सिफ़ारिश पर न जाने कितने दोज़ख़ियों को पर्वाना–ए–बख़शिश अता किया जायेगा।

इसी हक़ीक़त को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आने मुक़द्दस में यूँ बयान फ़रमाया है।

اَلْاَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ۔

(سورہ زخرف، آیت نمبر: ٦٧)

तरजमाः सच्चे मुख़लिस दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुशमन हो जायेंगे (कोई किसी के काम न आयेगा) मगर जो परहेज़गार होंगे (और जिन्हों ने दुनिया में तक़वा की बुनियाद पर एक दूसरे से मुहब्बत की होगी उनकी दोस्तियाँ काम आयेंगी और ऐसे दोस्त बरोज़े क़यामत एक दूसरे के मददगार साबित होंगे।

हमें अपना मुहासबा करना चाहिये: हमें अपना मुहासबा करके अपने दोसतों की फिहरिस्त पर नज़रे सानी करनी चाहिये, अगर किसी के दोस्त मेंआमाल व अक़ाएद के लिहाज़ से कोई कमी हो तो उस्के इज़ाले की जानिब मुकम्मल तवज्जुह देकर उस्की इस्लाह की मक़दूर भर कोशिश करनी चाहिये, बार–बार की तन्बीह व तहज़ीर, ज़जर व तौबीख और वाज़ व नसीहत के बावजुद अगर कोई गुमराह, बद मज़हब, शराबी, ज़ुवारी, तारिके नमाज़, फराइज़ से ग़ाफिल या किसी क़िस्मका बिगड़ा दोस्त अपनी इस्लाह व दुरूस्तगी और तज्क़ियए क़ल्ब पर आमादा न हो तो फ़ौरन उसे दोस्ती के मुआमलात मे ना अहल क़रार दे कर अपनी ज़िन्दगी से ख़ारिज करदेना चाहिये और उस से मुकम्मल तौर पर किनारा कशी इख़्तियार करने ही में आफियत समझनी चाहिये, क्यों कि ऐसे लोगों की दोस्ती हलाकत ख़ेज़ साबित हो सकती है।

मसलन आपका किसी ऐसे शख़्स से याराना क़ायम होगया जो बद अक़ीदगी या किसी हरामकारी में मुब्तला है तो आप की शरई ज़िम्मेदारी बनती है कि आप उस्की इस्लाह की भरपुर कोशिश करें, उस्की हिदायत के लिये मुसलसल जिद्दो व जुहद करें और उसे दोज़ख़ का ईंधन बनने से बचाने की हत्तल मक़दुर कोशिश करें, अगर आपकी पुरखुलूस कोशिशें बारआवर न हों और अनथक काविशें बेसूद साबित हों या बेइल्मी के सबब आप उस्की इस्लाह पर क़ादिर न हों तो फ़ौरन कतए तअल्लुक करके उस से जुदा होजायें, न उस्की बातें सुनें, न

उस्की सुहबत में रहें वरना वह अपने साथ आपको भी तबाह व बर्बाद करके कहीँ का न छोड़ेगा।

एक सवाल का जवाबः कुछ नादान कहते हैं कि अगर हम बुरों और गन्दों के साथ नहीं बैठेंगे तो बुरे अच्छे और गन्दे सुथरे कैसे बनेंगे? हमारी सोहबत ही तो उन्हें राहे रास्त पर लासकती है।

इस्का जवाब ये है कि बिलाशुबह जिनके अन्दर जज़्बाए इस्लाह व इर्शाद हो और जो अपनी इल्मी गहराई व गीराई नीज़ कुव्वत–ए– इस्तिदलाल व ज़ोर–ए–दलाएल से बुरों को नेक बनाने का हुनर जानते हों तो उन्हें बद अक़ीदों या फुस्साक व फुज्जार के साथ बग़र्जे वाज़ व नसीहत बैठने की इजाज़त होगी कि अगर उन्की कद व काविश और दावत व तबलीग़ से कोई एक फर्द भी दोज़ख़ से बचगया तो यह बहुत अज़ीम काम और दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत शुमार होगी।

लेकिन जो इल्म व मारिफत से कोरा हो, दुसरों से मुतअस्सिर होजाता हो या जिसके पास इल्मी खज़ाने होने के बावजूद दावत व तबलीग का जज़्बाए सादिक न हो उसे उनके क़रीब भी जाने की इजाज़त नहीं दी जासकती। उस्के लिये बद–अक़ीदा और फ़ासिक़े मुलिन की बातें सुनना और उस्की सुहबत में रहना नाजाइज़ व हराम होगा, क्यों कि उस्के गन्दे बदन से बद्अक़ीदगी और फ़िस्क़ व फुजूर की उठने वाली बदबु न सिर्फ यह कि उसे मुतअस्सिर करेगी, बल्कि उस्की ईमानी लज़्ज़त के ज़वाल का सबब बनेगी और उस्के साथ यह भी जहन्नम के गढ़े में जागिरेगा।

अच्छी सुहबत की बर्कतः हज़रत शैख सादी ने अपनी मशहुर किताब "गुलिस्ताँ" में सालिहीन व मुत्तक़ीन की सुहबते बाफैज़ की शानदार मिसाल पेश फरमाकर अच्छी दोस्ती के हुस्न व जमाल और उस्की बर्कत व कमाल से पर्दा उठाया है, फ़रमाते हैं।

"मैं ने एक ऐसी मिट्टी देखी जिस से गुलाब जैसी महक आरही थी, मैं ने तअज्जुब से पुछातु तो मिट्टी है, तेरे अन्दर खुश्बू कहाँ से आगई? यह सुनकर उस मिट्टी ने जवाब दियाः

ब्गुफ्ता मन गिले नाचीज़ बूदम, व लेकिन मुद्दते बा गुल नशीनम
जमाल हमनशीं बा मन असर कर्द
व गर न मन हमा ख़ाकम के हसतम

वह मिट्टी कहने लगीः मैं तो बेक़दर व बेहैसियत मिट्टी थी, मगर कुछ दिनों तक मुझे फुलों की सुहबत में रहने का शरफ. मिला है, मेरे दोस्त व हमनशीं का हुस्न व जमाल मुझ पर असर कर गया और मैं इस नेक सुहबत की बरकत से मुअत्तर होगई , वरना मैं तो आज भी वही मिट्टी हुँ, जो फुलों से दोस्ती करने से पहले थी।

मिट्टी के जवाब का खुलासा यह है किः मैं तो नाली का कीचड़ थी, मेरे तअफ्फुन से माहौल मुकद्दर था, लोग मुझसे नफ़रत व बेज़ारी का इज़हार किया करते थे, लेकिन ये जो आज मैं महक रही हुँ और मेरे बदन से उठने वाली खुश्बू लोगों को मेरा गिरवीदा बना रही है, यह सिर्फ और सिर्फ खुश्बूदार दोस्त व अहबाब की सुहबते बा बर्कत का नतीजा है। यह उनकी फैज़रसानी है कि उन्हों ने अपनी महकती

ख़ुशबुओं से मुझे महरूम नहीं रखा बल्कि मुझे भी ख़ुशबूदार बनाकर महका दिया। बिलकुल इसी तरह बद आमालियाँ इन्सान की रूह को मुतअफ़्फिन कर देती हैं और उस से उठने वाली बदबू पुरे माहौल को गदला करदेती है, लेकिन ऐसा बदबूदार इन्सान जब किसी खुश्बूदार शख्स की सुहबत इख़्तियार करलेता है तो उस्की बर्कतें उसे भी ख़ुश्बूदार बनादेती हैं।

अल्लाह वालों की मज्लिस में रहा करें: इस लिये अपने क़ल्ब व जिगर को मुअत्तर करने के लिये "अल्लाह वालों" की मज्लिसों में आना चाहिये, क्यों कि उनकी महफिलों में आने वाले दारैन में ऐसे महकते हैं कि बरोज़े क़यामत अहले महशर और फ़रिशते भी उनके उलुए मरातिब को देखकर तअ़ज्जुब करते हुए रश्क करेंगे, चुनानचा अल्लाह के रसूल ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं।

يَبْعَثُ اللهُ أُنَاسًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي وُجُوهِهِمُ النُّورُ، عَلَى مَنَابِرِ اللُّؤْلُؤِ، يَغْبِطُهُمُ النَّاسُ لَيْسُوا بِأَنْبِيَاءَ وَلَا شُهَدَاءَ هُمُ الْمُتَحَابُّونَ.

(کنزالعمال، ج۱، رقم الحدیث:۱۸۹۳)

तरजमाः रब्बे करीम बरोज़े कयामत कुछ ऐसी क़ौमों को उठायेगा जिनके चेहरे नूर से चमक रहे होंगे और वह मोतियों के मिंबर पर जलवा अफरोज़ होंगे, अहले महशर उनपर रश्क करेंगे, यह न अन्बिया होंगे न शुहदा, यह तो आपस में अल्लाह की रज़ा के लिये मुहब्बत करने वाले मुसलमान होंगे।

यानी उनका चेहरा नुरानी होगा और उनके मिंबर भी मोतियों जैसे दमकते होंगे, तबक़ाए अंबिया व शुहदा में न होने के बावजूद उन्हें यह मक़ाम व मरतबा सुहबते सालिहीन की बर्कतों से हासिल होगा।

<u>बदनसीब इन्सानः</u> लेकिन जो बदनसीब अच्छी सुहबत से एराज़ करके बुरी संगत इख़्तियार करेंगे और रब्बे करीम के नाफ़र्मान व सरकश बन्दों की मज्लिसों में बैठेंगे, उन्हें बरोज़े कयामत ज़िल्लत व रूसवाई का सामना करना होगा बल्कि ऐसे लोग मारे हसरत व अफसोस के अपने हाथ काट रहे होंगे।

क़ुरआन शरीफ़ में रब्बे करीम ने ऐसे नादान दोस्तों का ज़िक्र फ़रमाया है कि जिन्हों ने दुनियावी मुनाफा की हिर्स में अच्छे दोस्तों को छोड़कर बुरे लोगों की कुर्बत–व–सुहबत इख़्तियार की और खैबत व ख़ुससरान का शिकार हुए। ऐसे लोग बरोज़े क़यामत किस क़दर रंज व ग़म सहेंगे और किस तरह अपनी हसरत व यास का इज़हार करते हुए कफ़े अफ़सोस मलेंगे, क़ुरआने करीम उस्की मनज़र कशी करते हुए फ़रमाता हैः

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ۔ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِي لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ۔

(سورہ الفرقان، رقم الآیت: ۲۷-۲۸)

तरजमाः और क़यामत के दिन मारे हसरत व अफ़सोस के ज़ालिम अपने हाथों को काटेगा और कहेगाः काश कि मैं दनिया में रसुल अरबी ﷺ की दोस्ती औरी उनकी उलफत व मुहब्बत को अपनाए रखता और कहेगाः काश कि मैं फुलां को अपना दोस्त न बनाता।

इस आयते करीमा के शाने नुज़ूल के सिलेसिले में अरबाबे सीरत और मुफस्सीरीन किराम ने एक वाक़िआ का ज़िक्र फ़रमाया है, वह फ़रमाते हैंः

उक़्बा बिन अबु मुईत की ख़बासतः एक बद्बख़्त काफिर उक़बा बिन अबु मुईत रसुले अरबी ﷺका पड़ोसी था, पड़ोसी होने के नाते उस्का रसुले अरबी ﷺ के साथ उठना बैठना था, एक मरतबा अपने कामयाब सफर से वापस आकर उक्बा बिन अबु मुईत ने सरदाराने कुरैश की पुर तकल्लुफ दावत की, सनादिदे कुरैश के साथ उस ने अल्लाह के रसुल ﷺको भी मदऊ किया, ऐन खाने के वक़्त हुजूर अकरम ﷺने खाना खाने से इन्कार करते हुए इरशाद फ़रमायाः जब तक तो कलमा–ए–शहादत पढ़कर इस्लाम की हक़्क़ानियत का एलान नहीं करेगा मैं तेरा ख़ाना नहीं खाऊंगा।

यह बात अहले अरब के लिये बिल ख़ुसूस कुरैश के लिये बड़ी आर की थी कि कोई मेहमान खाना खाए बग़ैर चला जाए, बदरजाए मजबुरी उक़्बा ने सिर्फ़ ज़बानी इक़रार कर लिया और दिल से वह कुफ्र पर क़ायम रहा, ताकि रसुले अरबी ﷺउस्की दावत का खाना तनावुल फरमा लें, जब उक़्बा ने कलिमए पाक पढ़ लिया तो रसुले अरबी ﷺ ने खाना तनावुल फरमा लिया।

दुशमने रसुल, उबै बिन ख़ल्फ को जब इस वाक़िया की इत्तिला हुई तो उस्के पैरों तले ज़मीन खिसक गई और उफ्ता व खेजां उक़्बा के पास आकर बोलाः तु पागल होगया है, किया तुने अपने आबा व अजदाद के दीन को तरक कर दिया और मुहम्मद (फिदाहु अगी व उम्मी ﷺ) का

लाया हुआ नया दीन क़ुबूल कर लिया है? उबै बिन ख़ल्फ़ उक़्बा बिन अबु मुईत पर लान व मुलामत के तीर बरसाता रहा, जब ख़ामोश हुआ तो उक़्बा ने कहाः आप तसल्ली रखें! मैं ने मुहम्मद(ﷺ) का दीन क़ुबूल नहीं किया बल्कि उन्हें चकमा दिया है, और फिर उस ने पुरी दासतान सुनाई।

<u>उबै बिन ख़ल्फ़ का ख़बीस मुतालबाः</u> उस्की दासतान सुनने के बाद उबै बिन खल्फ मलऊन ने कहाः मैं तुझसे उस वक़्त तक बात नहीं करूंगा जब तक कि तु मुहम्म्दे अरबी (ﷺ) के चेहरा पर न थूक दे। (अल्लाह की पनाह) तेरे थूक देने से मुझे यकीन आजायेगा कि तू ने वाक़ई उनकी दोस्ती इख़्तियार नहीं की है।

यह ख़बीस मुतालबा सुनकर उक़्बा बोला मैं तेरी दोस्ती के ख़ातिर तेरी खुशी के लिये ज़रूर ऐसा करूंगा, उस्के बाद वह मरदूद हुज़ुर नबी अकरम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपके चेहरए शम्स व दुहा पर थूकने की जसारक की, मगर हुआ क्या,हज़रत ज़हहाक رضی اللہ عنہ की जुबानी समाअत फ़रमाइये, आप ने फ़रमायाः

لَمَّا بَزَقَ عُقْبَةُ لَمْ تَصِلُ الْبَزْقَةُ إِلى وَجْهِ رَسُولِ الله ﷺ بَلْ وَصَلَتْ إِلى وَجْهِهٖ هُوَ كَشَهَابِ نَارٍ فَاحْتَرَقَ مَكَانُهَا وَكَانَ اَثَرُ الْحَرْقِ فِيْ وَجْهِهٖ إِلَى الْمَوْتِ۔

(السیر الحلویہ، الجزء الاول، ص:۴۴۷)

तरजमाः जब उक़्बा ने थूका तो वह नापाक थूक रसूले अरबी ﷺ के चेहरे तक नहीं पहुँचा, बल्कि बहुक्मे इलाही शोला बनकर उसी के चेहरेपर जा गिरा और उसने उस्के चेहरे का इतना हिस्सा जला दिया

और उस जलन का असर मौत तक उस ख़बीस के नापाक चेहरे पर बाक़ी रहा।

आपने मुलाहज़ा फ़रमाया कि ग़लत सुहबत और बुरी संगत ने उक़्बा बिन अबु मुईत को कहीं का नहीं छोड़ा, उसने काएनात के दुल्हा हुज़ुर रहमते आलम ﷺ की मुहब्बत पर अपने ख़बीस दोस्त "उबै बिन ख़ल्फ" की मुहब्बत को और हुज़ूर ﷺकी सुहबत व क़ुर्बत पर उस मलऊन की दोस्ती को तरजीह देकर दोनों जहाँ का ज़ियाँ मोल लिया, यह वाक़िआ बुरी सुहबत इख़्तियार करने वालों के लिये दर्से–इबरत है।

<u>हमारी मुश्तरिका ज़िम्मेदारियाँ:</u> इस्लाम की तबलीग़ व इशाअत और क़याम व बक़ा का वाहिद ज़रिया "तबलीग़" यानी इस्लामी पैगाम़ की तर्सील व इशाअत है तबलीग़ ही के ज़रिया यह आफ़ाक़ी दीन अतराफे आलम में फैला और फला है, आजके इस दौरे पुरफितन में भी इसके अक़ायद व आमाल और तालीमात व हिदायात को "दावत व तबलीग़" के ज़रिये ही तहफ्फुज़ फ़राहम किया जा सकता है। दीनी तालीम व तरबीयत भी तबलीगे़ दीन ही का एक हिस्सा है, हर मुसलमान की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने ज़ेरे असर हल्क़ों तक इस्लाम का सही पैगाम़ पहुँचाए, जैसे कि वालिदैन पर अपने बच्चों की सही तालीम व तरबियत करना और बड़ों पर अपने छोटों की दुरूस्त रहनुमाई करना लाज़िम व ज़रूरी है।यानी हर शख़्स की ज़िम्मेदारी बनती है किवह अपने मुतअल्लेक़ीन व अहबाब को दीन की अहम व ज़रूरी मालुमात फ़राहम करे। यह तरीक़ाए तबलीग़ हर दौर में मुअस्सिर रहा है और इसके अनवार व बरकात से घर घर में इस्लामी चिराग़ रौशन हुआ है।

मुसल्मानों को हर वक़्त अपनी इस ज़िम्मेदारी का एहसास होना चाहिये ताकि मुस्लिम मुआशरा तबाह व बरबाद होने से महफूज़ रहे और नौनिहालो–ए– इस्लाम कुफ्र व इलहाद का शिकार होने से बचे रहें।

मकामे तअज्जुब है कि जिस इस्लाम ने मुआशरे से फिस्क व फुजूर और हर तरह की ख़राबियों के को दूर करने के लिये मोमिनों को यह इजाज़त नही दी किवह अलल्–एलान फिस्क़ व फुजूर करने वाले मुस्लमानों से क़ल्बी तअल्लुक़ात और सच्ची दोस्तियाँ क़ायम करें और उन्हें अपना ख़लील बनाएं, आज उसी इस्लाम के नाम लेवाओं का एक बड़ा तबक़ा कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के साथ मुवालात क़ायम करके उन्हें अपना हमराज़ बना कर उनकी मुशरिकाना रुसूम में शिरकत कर रहा है और इसे दोस्ती का नाम देकर हक़्क़े दोस्ती अदा करने की बातें कर रहा है!

ऐसे पुर–आशोब हालात में अरबाब मिंबर व मेहराब और साहिबाने इल्म व दानिश को पुरी ताक़त व कुव्वत के साथ कुफ्र व इलहाद के सैलाब को रोकना होगा और अपने भाइयों को दोज़ख के दायमी अज़ाब से बचाने की तदबीर करनी होंगी।

आज दावत व तबलीग़ से हमारी ग़फ़लत ने हमारे मुस्तक़बिल को तारीकी में लाडाला है, कालेजों, स्कुलों और युनिवर्सिटीयों मे ज़ेरे तालीम हमारे मुस्लिम नौजवान "जो कि हमारा क़ीमती सर्माया और हमारा रौशन व ताबनाक मुस्तक़बिल हैं" ग़ैरों की उलफ़त व मुहब्बत की रव में बहकर शरई हुदूद पामाल कर रहे हैं और न सिर्फ़ यह कि हराम कारियों में मुब्तला होकर अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब को दावत दे

रहे हैं, बल्कि काफ़िराना व मुशरिकाना मरासिम इख़्तियार करके अपनी उख़रवी तबाही का सामान फ़राहम कर रहे हैं।

उन्हें मालुम ही नहीं कि हमारे प्यारे दीन ने ग़ैर–मुस्लिमों से तअल्लुक़ात की जो हदें मुक़र्रर फ़रमाईं वह क्या हैं? और इस सिलसिले में हमारा कुरआन हमें क्या हिदायात फ़राहम कर रहा है,? हालांकि वह कुरआन को भी मानते हैं और साहिबे कुरआन पर भी यक़ीन रख़ते हैं, अपने ऐसे ग़ाफ़िल भाइयों की आगाही के लिये चन्द बाते ग़ोशगुज़ार करदेना ज़रूरी मालुम होता है, ताकि वह शरीअत की हदें जान सकें और बतौफ़िक़े इलाही उन्हीं हदों में रहकर मोमिनाना ज़िन्दगी गुजार सकें।

ग़ैर-मुस्लिमों को अपना हम-राज़ बनाना हराम है: हमारा प्यारा रब अपनी मुक़द्दस किताब कुरआने करीम में हमें हिदायत देरहा है:

يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَأْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۔ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۔ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيَاتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۔

(سورہ آل عمران، آیت نمبر:۱۱۸)

तरजमा: ऐ इमान वालों अपना राज़दार ग़ैरों को न बनाओ! वह तुम्हें ख़राबी पहुँचाने में कोई कसर न उठा रखेंगे जो मुसीबतें तुम्हें पहुँचाती हैं वह उन्हें पसन्द करते हैं, बुग्ज़ उनके मुँह से ज़ाहिर हो चुका है और जो नफ़रत व अदावत उन्हों ने अपने सीनों मे छुपा रखी है वह उस से भी बड़ी है। हम ने अपनी आयतें तुम्हारे लिये साफ तौर पर बयान कर दीं, अगर तुम समझदार हो (तो समझो)।

इस आयते करीमा मे परवरदिगारे आलम ने अपने मोमिन बन्दों के लिये यह हिदायत जारी फ़रमाई है किवह ग़ैर मुस्लिमों को अपना मुख़लिस दोस्त और राज़दार न बनाएं, कियों कि उनके दिलों में मोमिनों के लिये नफ़रत व अदावत कूट–कूट का भरी हुई है वह मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने और उन्हें परेशान करने का कोई भी मौक़ा अपने हाथ से जाने नहीं देते, वह ये चाहते हैं कि अहले इस्लाम तबाह व बर्बाद होजायें, बल्कि वह अपने मुँह से नफ़रत व बेजारी का इज़हार व एलान भी करते रहते हैं और जब मुसलमानों पर मसाएब व आलाम का नुजुल होता है तो उन्हें बड़ी मुसर्रत लाहिक़ होती है।

<u>एक शुबह का एज़ालाः</u> अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वाज़ेह तौर पर उनकी अदावत व दुशमनी को बयान फ़रमा दिया है, कोई यह शुबह हरगिज़ न करे कि ये औसाफ़ तो हुज़ुर ﷺ के ज़माने के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के हैं। आज के कुफ़्फ़ार एसे नहीं, क्यों कि यह रब्बे करीम का फ़रमान है जो कि क़यामत तक आने वाले तमाम कुफ्फार व मुशरिक़ीन के अहवाल व आदात को जानता है।

لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً का हुक्म सिर्फ सहाबा के लिऐ न था, बल्कि यह हुक्म क़यामत तक आने वाले तमाम मुसलमानों के लिये आम है, ये भी गौर करना चाहिये कि सिर्फ़ ज़माने का फ़र्क़ है, वरना जौ औसाफ़ व आदात हुज़ूर ﷺ के ज़माने के कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन के थे वही औसाफ़ व आदात और नफ़रत व अदावत के वही जज़बात आज के कुफ़्फ़ार बिल–ख़ुसूस हिन्दूस्तान के कुफ़्फ़ार में भी पाए जा रहे हैं, लिहाज़ा

असरे हाज़िर के इन हरबी कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन से क़लबी दोसतियाँ क़ायम करना, उन्हें मुख़लिस दोस्त बना कर अपना हमराज़ बनाना और उन पर एतमादे कुल्ली करना बनस्से कुरआन हराम व नाजायज़ है, क्यों कि जिस तरह रात और दिन जमा नहीं हो सकते, आग और पानी का इजतेमा नहीं हो सकता और सियाही व सफ़ेदी का मिलाप नहीं हो सकता इसी तरह कुफर व इमान की तासीर भी जमा नहीं हो सकती।

ईमान व कुफ्र का तज़ादः चुनानचा कुफ्र व शिर्क ऐसी तारीकी है जिस से सिर्फ उयुब व नक़ाएस और मुतअद्दिद बुराइयां जनम लेती हैं, मसलन कुफ्र, काफ़िर को बद किरदारी, बेहयाई, बेग़ैरती, बुत परसती, हट धरमी, दग़ाबाज़ी, ख़ुद गर्ज़ी और सियाह क़लबी जैसी बिमारियों में मुबतला करके हलाक करदेता है, जब कि इमान मोमिन को साहिबे किरदार, बा हया, ग़ैरत मन्द, ख़ुदा परस्त, मुनकसिरूल मिज़ाज, बावफा, मुत्तक़ी, बेनफ़्स और रौशन जमीर बनाता है। जिस तरह यह औसाफ़ बाहम मुतज़ाद हैं, इनका इजतेमा नहीं हो सकता इसी तरह मोमिन व काफ़िर के माबैन मुख़लिसाना दोस्ती भी क़ायम नहीं हो सकती।

उन से क़लबी तअ़ल्लुक कायम करने वालों और सच्ची मुहब्बत रखने वालों को ज़जर व तौबीख़ करते हुए रब्बे करीम ने इर्शाद फ़रमाया।

هَاأَنْتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا
اٰمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ۔

(سورہ آل عمران، آیت نمبر ۱۱۹)

तरजमाः तुम्हारा हाल यह है कि तुम उन से महब्बत

करते हो (उनका हाल यह है) वह तुम से महब्बत नहीं करते और तुम सब किताबों पर इमान रखते हो और (वह) जब तुम से मिलते हैं, कहते हैं कि हम इमान लाए हैं और जब तनहा होते हैं तो मारे गुस्से के अपनी उन्लियाँ चबाते हैं, ऐ हबीब! आप फ़रमा दीजिये! कि तुम लोग (अपने गुस्से की आग में जल कर) मर जाओ! बेशक अल्लाह तुम्हारे दिलों की बातों को खूब जानने वाला है।

अल्लाह तआला ने इस आयते करीमा में मोमिन और काफ़िर दोनों की फ़ितरतों को बयान फ़रमाया है, कि सिफते इमान मोमिनों को इस कदर सीधा और भोला भाला बना देती है किवह कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन और यहुद व नसारा की पुरफ़रेब चालों को समझ नहीं पाते और उनकी दिखावे की मुहब्बत से धोका खाकर उन्हें अपना मुख़लिस दोस्त समझ कर उन से सच्ची दोस्ती कर लेते हैं, जब कि उन काफ़िरों का हाल यह है कि मुसलमानों से मुलाक़ात के वक्त अपनी मुख़लिसाना महब्बत का इज़हार करते हैं, उन पर मर मिटने के जज़बात पेश करते हैं और तनहाइयों में मोमिनों से इस क़दर बुग्ज रखते और हसद करते हैं कि शिद्दते ग़ज़ब से अपनी उंग्लियां तक चबा डालते हैं।

इस लिये अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया किः उनके मकर व फ़रेब में आकर अपने दिलों में न उनकी महब्बत का चिराग़ रौशन करो, न उन्हें अपना हमराज़ बनाओ कि अपने दीनी, क़ौमी और ख़ानदानी राज़ उन से बयान करना शुरू करदो और न ही उन पर मुकम्मल भरोसा

करो, क्यों कि अगर तुम ने उन्हें अपना हमराज़ बनाकर उन पर तकिया (भरोसा) किया तो एक न एक दिन वह तुम को ज़रूर ज़रर (नुक़सान) पहुँचायेंगे और तुम्हारे लिये उनके मकर व फ़रेब से बच निकलना निहायत मुशकिल होजायेगा और समझ उस वक़्त आएगी जब बहुत देर होचुकी होगी, क्यों कि उनका हाल यह है कि वह न तुम्हें खुश देख सकते हैं और न ही तुम्हारी तरक्क़ी बरदाशत कर सकते हैं।

<u>कुफ्फार से मुवालात व मुदाहनत ना जायज़ है:</u> एक दो नहीं बल्कि कई मक़ामात पर उस ने अपने भोले भाले मोमिन बन्दों को उनसे रिशता–ए– मुवालात क़ायम करने और उनकी मुदाहनत से मना फ़रमाया है बल्कि शदीद तरीन वईदें भी वारिद फ़रमाई हैं,

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِيْنَ اَوْلِيَاءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذَالِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللّٰهِ فِيْ شَيْءٍ اِلَّا اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰةً ۔ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۔

(سورہ آل عمران، آیت نمبر:۲۸)

तरजमा : मोमिन काफ़िरो को अपना मुख़लिस दोस्त न बनायें! और जिसने उन्हें अपना मुख़लिस दोस्त बनाया तो (वह अच्छी तरह समझ ले कि उसके रब) अल्लाह से उसका कोई तअल्लुक़ और रिश्ता न रहा, मगर उस हालत में कि तुम उनसे अपना बचाव करना चाहते हो और अल्लाह तुम्हें अपने ग़ज़ब से डराता है और अल्लाह की जानिब सब को लौट कर जाना है।

ग़ौर फ़रमायें! अल्लाह ने काफ़िरों को अपना वली और दोस्त बनाने वालों को कैसी सख़्त वईद सुनाई हैं, यहाँ तक फ़रमा दिया कि जिन्हों

ने उन्हें अपना दोस्त व हमराज़ बनाया उनका मुझ से कोई तअल्लुक़ न रहा, ऐसी सख्त तन्बीह के बाद भी अगर किसी मोमिन का दिल ख़ौफ़–ए–खुदा से मामुर न हो और वह लर्ज़ा बरअन्दाम न हो तो उसे अपने ईमान की फ़िक्र करनी चाहिये, एक इन्सान के लिये इस से बड़ी महरूमी भला क्या हो सकती है कि उसका रिश्ता उसके रब से टूट जाये।

<u>सब से बड़ा अहमक़:</u>उस से बड़ा अहमक, महरूम और ख़ाइब व ख़ासिर भला कौन होगा जो अपने मालिके हक़ीक़ी से रिश्तए महब्बत क़ाएम न करना चाहे, दुनिया के मजाज़ी आक़ाओं की शौकत व अज़मत का हाल यह है कि उनके नौकर व गुलाम उनका कुर्ब हासिल करना चाहते हैं, उसके लिये हर तरह के जतन करते हैं, तरह तरह के वसाएल तलाश करते हैं कि किसी तरह आक़ा की नज़रे करम हो जाये और आक़ा कह दे कि येह मेरा गुलाम है।

तो मुसलमानों को क्या हुआ कि वह अहकमुल हाकिमीन अल्लाह का कुर्ब हासिल करने और उस से रिशताए महब्बत इस्तेवार रखने की कोशिश नहीं करते और उसके सख़्ती से मना करने के बावजूद कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन से रिशताए मुवालात तरक करने और उनकी इत्तेबा व पैरवी से मुनहरिफ होने के लिये आमादा नहीं होते!

अल्लाह तबारक व तआला दूसरे मक़ाम पर इरशाद फ़रमाता है:

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ۔ (سورہ ھود، آیت نمبر:۱۱۳)

तरजमाः और उन्की जानिब माइल मत हो जिन्हों ने (कुफ़्र व शिर्क़ के ज़रिये अपनी जानों पर) ज़ुल्म किया, वरना तुम्हें भी (दोज़ख़ की) आग पहुँचेगी और उस वक़्त तुम्हारे लिये अल्लाह के सिवा कोई मददगार नहीं होगा, फिर (मिन जानिबिल्लाह) तुम्हारी मदद नहीं की जायेगी।

इस आयते करीमा में रब तबारक व तआ़ला ने कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन से मुवालात व मुदाहनत की वाज़ेह मुमानअत फ़रमाई और साफ़ तौर पर एलान कर दिया कि ख़ुद मुसलमान कहने वाले जो लोग भी इस जुर्मे अज़ीम के मुरतकिब होंगे उन्हें दोज़ख़ की भड़क्ती आग में गि़रफ़्तारे अज़ाब किया जायेगा उस वक़्त न कोई दोस्त उन्हें बचा सकेगा और न किसी क़िस्म के हीले बहाने उन्हें कुछ फ़ायदा पहुँचा सकेंगे।

लिहाज़ा अल्लाह तबारक व तआ़ला का मोमिनों पर एहसाने अज़ीम है कि उस ने दुशमनाने दीन की आदात व औसाफ़ को वाज़ेह तौर पर बयान कर दिया है, ताकि मोमिन उनके दामे फ़रेब में आकर किसी क़िस्म के ख़सारे का शिकार न हों।

<u>क्या मुसलमान अक्वामे आलम से कट-कर ज़िन्दगी गुज़ारें:</u>

मक़सदे शरीअत फ़क़त इस क़दर है कि अहले ईमान आख़िरत में तबाह व बर्बाद होने और दुनिया में तरक्क़ी की राहों में पिछड़ जाने से महफ़ुज़ रहें, मनशाए इलाही हरगिज़ यह नही है कि मुसलमान कुफ़्फ़ार व मुशरिक़ीन, यहुद व नसारा और दीगर अक़्वामे आलम से कट कर रहें, उन से अलग थलग रह कर ज़िन्दगी गुज़ारें और उन से अपने

तिजारती, सियासी और मआशी तअल्लुक़ात भी क़ायम न करें, बल्कि मक़सूद सिर्फ इतना है कि मुसलमान शरई हुदूद पामाल न करें, बल्कि शरीअत के मुक़र्रर करदा ज़ाब्तों में रह कर ग़ैरों से तअल्लुक़ात उस्तुवार करें।

अब रह गया यह सवालः कि"शरीअते इस्लामिया की मुक़र्रर करदा हदें किया हैं जिन में महदूद रहकर हमें गैरों से तअल्लुक़ात कायम करने हैं" तो इसके लिये तअ़ल्लुक़ात की मुन्दर्जा ज़ैल किस्में मुलाहज़ा फ़रमायें! तकि इस अहम मसले के तमाम गोशे वाज़ेह होजायें, शुकूक व शुब्हात के बादल छंट जायें और आफ़ताबे निस्फुन नहार की ताबानी अज़्हान व अफ़्कार को मुनव्वर व मुजल्ला कर सके।

तअल्लुक़ात की क़िस्मेंः बाहमी तअल्लुक़ात की कुल पाँच क़िस्में हैं, इन्हें समझ लेने के बाद ग़ैर मुस्लिमों से तअल्लुक़ात की नौइयत भी वाज़ेह हो जायेगी और उनके जवाज़ व अदमे जवाज़ की राहें भी रौशन होंगी।

(1) **मुवासातः** दो शख़्सों के माबैन इतना तअ़ल्लुक क़ायम हो कि दोनों अपने ज़ाती या क़ौमी फवाइद के हुसूल के लिये एक दूसरे के साथ हमदर्दी के साथ पेश आयें, ग़म ख़्वारी करें और मसाइब व आलाम में एक दूसरे की इमदाद करें।

(2) **मुआमलातः** सियासी, तिजारती, मआशी और दीगर दुनियावी उमूर में एक दूसरे से नफ़अ उठाने और तआवुन करने की गर्ज़ से दो लोगोंके माबैन तअल्लुक़ात क़ायम हों, इसके अलावा कोई और मक़्सद न हो।

(3) **मुदारातः** मुदारात का मतलब यह है कि दीनी और दुनियावी उमूर

में हुसूले मनफ़अत के लिये काफिरों से उलफ़त व महब्बत और ख़ुश अख़्लाक़ी का मुज़ाहिरा किया जाये, इस क़िस्म के तअ़ल्लुकात की ज़रूरत उन मुसलमानों को पेश आती है जो ग़ैर मुस्लिम मुलकों में अक़ल्लियत में रह रहे होते हैं, जैसे हिन्दुस्तान के मुसलमान, क्यों कि अहले इस्लाम अगर कुफ़्फ़ार व मशरिक़ीन के साथ उलफ़त व महब्बत और हुस्ने अख़लाक़ व किरदार का मुज़ाहिरा न करें, बल्कि अलल् एलान नफरत व अदावत का इज्हार करें तो यह दुशमनान दीन उनके मज़हबी उमुर की अदाएगी में रोड़े डालकर उनके लिये बड़ी मुशकिलें खड़ी कर देंगे।

तअल्लुक़ात की मज़कुरा तीनों सुरते जाइज़ हैं: शरई हुदूद मे रहकर ग़ैर मुस्लिमों से तअल्लुक़ात की मुन्दर्जा बाला तीनों क़िस्में जाइज़ व दुरूस्त हैं, यानी उनसे सियासी, तिजारती, मआशी और दीगर दुनियावी तअल्लुक़ात क़ायम करना जायज़ है, मसाइब व आलाम में उनकी ग़मख़्वारी करना और उनसे हमदर्दी के साथ पेश आना दुरूस्त है, दुनियावी मनफ़अत के लिये उनसे ख़ुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आना शरअन सहीह है, बल्कि इन मुआमलात में मज़हबे इस्लाम ने जिस क़दर वुसअ़ते ज़रफ़ी और कुशादा क़ल्बी का मुज़ाहिरा फ़रमाया है, मज़ाहिबे आलम में उस्का उशरे अशीर भी नज़र नहीं आता, आप ग़ौर फ़रमायें! किः

(1) जिस तरह मुस्लिम पड़ोसी का हक़ अदा करना ज़रूरी है इसी तरह काफ़िर पड़ोसी के हुक़ूक़ की अदाएगी भी लाज़िम है।

(2) जिस तरह किसी मुसलमान को ज़लील करना, उसे सब्ब व शितम का निशाना बनाना और उसे परेशान करना ना जाइज़ है,

इसी तरह किसी ग़ैर मुस्लिम को भी बिला वजहे शरई ज़लील करना, गाली देना और उसपर जुल्म व ज़्यादती करना जाइज़ नही

(3) जिस तरह किसी मुसलमान का माल लूट लेना, ग़सब करलेना या चुरा लेना शरअन हराम है, इसी तरह किसी काफ़िर की दौलत को लूटने, ग़सब करने और चुराने की भी इजाज़त नहीं।

(4) जिस तरह मुस्लिम भाई की इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त लाज़िम व ज़रूरी है उसी तरह ग़ैर मुस्लिम की इज़्ज़त व आबरू की पासदारी भी ज़रूरी है।

(5) दग़ाबाज़ी और बेवफ़ाई मोमिन की तरह काफ़िर के साथ भी नाजाइज़ व हराम है

(6) मुस्लिम ख़ातुन के मानिन्द किसी काफ़िरा दोशीज़ा को भी बनज़रे ग़लत देखने की इजाज़त नहीं।

(7) किसी मुसलमान के माल की तरह काफ़िर के माल में भी ख़यानत करना शरीअ़त की नज़र मैं हराम व नाजाइज़ है।

(8) जिस तरह मोमिन से क़र्ज़ लेकर उसे शुक्रिया के साथ लौटाना ज़रूरी है इसी तरह काफ़िर से लिये हुए कर्ज़ को भी बशुक्रिया अदा करना लाज़िम है।

(9) इसी तरह काफ़िरों से ख़रीद व फ़रोख़्त करने और उन्हें नौकरी देने या उनके यहाँ नौकरी करने में कोई हर्ज नहीं है, बशर्ते कि कोई ऐसा काम न किया जाए जो नाजाइज़ व हराम हो।

ग़र्ज़ यह कि मुसलमान शरई हुदूद की पामाली किये बग़ैर कुफ़्फ़ार व मुश्रिक़ीन से तअल्लुक़ात क़ायम कर सकते हैं, चाहे मुआमलात की शकल में हों या मुवासात व मुदारात की सूरत में।

ग़ैरों के साथ तअल्लुक़ात की वह दो सुरतें कि जिनकी मज़हबे इस्लाम में कोई गुनजाइश नहीं रखी गई है, वो ये हैं:

(4) **मुवालातः** इसका मतलब यह है कि कोई मुस्लिम किसी काफ़िर से ऐसा तअल्लुक़ क़ायम करे कि उसे अपनी क़ौम या ख़ानदान का फ़र्द क़रार दे और उस पर मुकम्मल भरोसा करके उस से ऐसा बे तकल्लुफ़ होजाए कि क़ौम या ख़ानदान के राज़ भी उस से मख़्फ़ी न रखे।

मुवालात हराम हैः इस क़िस्म के तअल्लुक़ात की इस्लाम ने इजाज़त नहीं दी है, क्यों कि ऐसे तअल्लुक़ात ऐसी क़ौमों या ऐसे लोगों के माबैन ही क़ायम हो सकते हैं जिनकी तहज़ीब व तमद्दुन और ख़ुनी रिशते में यकसानियत हो, मुवालात को इस्लाम ने हराम क़रार दिया है, इसलिए कि इस क़िस्म का तअल्लुक़ मुसलमान को कुफ़्र व शिर्क की दहलीज़ तक पहुँचा देता है और बसा औक़ात उसे इमान के नूर से महरूम करके कुफ़्र की तारीकी में ला डालता है क्यों कि इस तरह का रिशता क़ायम होजाने के बाद मोमिन का कुफ़्रिया मरासिम से बच पाना मुश्किल ही नहीं बल्कि मुश्किल तर हो जाता है।

हमारा आए दिन का मुशाहदा है कि हमारी नौजवान नस्लें ग़ैरों से मुवालात क़ायम करके धड़ल्ले से कुफ़्फ़ार व मुश्रिक़ीन के दीनी शिआर

को इख़्तियार करती चली जा रही हैं, होली, दीवाली और दीगर तेहवारों में उन्हीं के रंग में रंगकर शिर्कत करना, बल्कि मन्दिरों में बेजान बुतों के सामने हाथ जोड़ कर खड़े होना, उन पर मालाएं डालना, उनके रूबरू सर झुका कर ताज़ीम से खड़े होना बल्कि सजदे और पूजा–पाठ तक करना ऐसी कामन चीज़ें होती चली जा रही हैं, जिन्हें बअज़ नादान मअयूब नहीं समझते, हालांकि यह बातें इनसान को कुफ़्र के दलदल में फेंक देती हैं और ऐसा करने वाले बद–बख़्त उख़्रवी सआ़दत से महरूम हो जाते हैं।

ग़ैर तो ख़ैर ग़ैर हैं, अगर अपना खूनी रिश्तेदार भी(अल्लाह की पनाह)काफिर हो तो उस से भी रिश्तए मुवालात कायम करना नाजाइज़ व हराम है।

सीरते सहाबा के ताबिन्दा नुक़ूशः हज़रात सहाबए किराम की सीरते पाक से हमें यही दर्स और उनकी रौशन व ताबनाक हयाते मुक़द्दसा से हमें यही सबक़ मिलता है।

इन नुफ़ूसे कुद्सिया की कुफ्फार व मुशरिक़ीन से नफ़रत व बेज़ारी और अदमे तअल्लुक़ में शिद्दत का अन्दाज़ा उन वाकिआ़त से लगाएं जो कुतुबे अहादीस व सियर में जलवा रेज़ हैं, चन्द वाक़िआत लिखे जारहे हैं, हमें मुताला करके इबरत हासिल करनी चाहिये!

गज़वए बदर के मौकअ पर हज़रत अबू उबैदा ﷺने अपने सगे बाप को दुशमनों की सफ़ में देखा तो फ़ौरन तलवार लेकर लपके और पल भर में उसका सर तन से जुदा कर दिया, एक लमहे के लिये भी

उनके हाशियए दिमाग़ में यह ख़याल न आया कि वह उनका बाप है। हज़रत सैय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को दुशमनाने दीन की सफ़ों में देखा तो बेक़ाबू हो गए और यह भूल गए कि वह आपका अपना ख़ूने जिगर है, तलवार लेकर बढ़े कि उसकी गर्दन उड़ा दें, मगर हुज़ूर ﷺ ने रोक दिया, क्यों कि आप ﷺ को मालूम था कि सआ़दते अज़ली उनके क़दम बोस होने वाली है और उनके दिल में शम्ए ईमान रौशन होने वाली है।

यही सिद्दीक़े अकबर हैं कि उनके दूसरे बेटे हज़रत अबदुर रहमान رضی اللہ عنہ ने एक मर्तबा उन से कहा "वालिदे बुज़ुर्गवार! गज़वए बदर के मौक़े पर आप मेरी तलवार की ज़द में थे, मैं ने बाप समझ कर छोड़ दिया था, यह सुनकर सैय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर जोशे इमानी के साथ उन्हें जवाब देते हैं कि ख़ुदा की क़सम! अगर तू मेरी तलवार के सामने आता तो तेरा सर तन से जुदा करदेता एक लमहे के लिये भी न सोचता कि तू मेरा लख़्ते जिगर है।

यह हज़रत मुसअब बिन उमैर رضی اللہ عنہ हैं इन्हों ने बदर के क़ैदियों में अपने भाई! अबू अज़ीज़ बिन उमैर को देखा कि एक अनसारी सहाबी उनके पैरों को रस्सियों से बाँध रहे हैं, यह देख कर अपने अन्सारी भाई से फ़रमायाः भाई जान! इसे खूब मज़बूत बाँधना, ताकि भाग न सके, यह सुनकर अबू अज़ीज़ बोलाः तुम मेरे सगे भाई होकर ऐसी दिलआज़ार बातें कर रहे हो रिशतए उख़ुव्वत का कुछ तो पास रखो! मुस्अब बिन उमैर ने जो जवाब दिया वह कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन से

रिश्तए मुवालात क़ायम रखने वाले आज के नादान मुसलमानों के लिये दरसे इबरत है, आप ने फ़रमायाः मेरे भाई तुम नहीं हो, बल्कि यह अन्सारी है जो तुम्हें रस्सियों से बाँध रहा है।

ये मुसअब बिन उमैर वही हैं जिन्हों ने गज़वाए उहद में न सिर्फ यह कि अपने भाई उबैद को ललकारा बल्कि उसे क़त्ल करके वासिले जहन्नम किया और सुब्हे क़यामत तक आने वाले मुसलमानों को यह पैग़ाम दे दिया कि अगर सगा भाई भी रसूले अरबी ﷺ का दुशमन हो जाए तो वह किसी रिआयत व तअल्लुक़ का हक़दार नहीं है।

अमीरूल मोमिनीन हज़रत सैय्यिदुना उमर फारूक़े आज़म رضي الله عنه ने गज़वाए बदर में अपने मामुं आ़स बिन हिशाम की गर्दन उड़ाई और हज़रत सैय्यिदुना अली मौलाए काएनात رضي الله عنه ने मैदाने बदर में अपने कई रिश्तेदारों को क़त्ल किया।

यह हमारे असलाफ़े किराम के कमाले ईमान और जज़्बए सादिक़ के वह अनवार हैं जो आज भी चमक रहे हैं और हम जैसे कमज़ोर अहले सुन्नत के कुलुब व अज़हान को मुनव्वर व मुजल्ला कर रहे हैं।

(5) **<u>मुदाहनतः</u>** लुग़त में मुदाहनत "चापलुसी" को कहते हैं, शरअन इसकी दो किस्में हैं, 1—दुनियावी फ़वाइद या ज़ाती, क़ौमी और मिल्ली फाएदों के हुसुल के लिये शरई उमूर में नरमी और कोताही बरतना, 2— कुफ्फार व मुशरिकीन वग़ैरह के ज़ुल्म व सितम से बचने के लिये अहकामे शरअ़ को तरक कर देना या उनकी सरकशी व तअद्दी के पेशे नज़र छुपकर अल्लाह की बन्दगी करना।

मुदाहनत की दोनों सुरतें हराम हैं: मुदाहनत की ये दोनों क़िस्में नाजाइज़ व हराम हैं, पहली सुरतके अदमे जवाज़ की वजह "दुनियावी मुनाफ़ा को अहकामे शरअ पर" तरजीह देना है, लिहाज़ा किसी मोमिन के लिये जाइज़ नहीं कि ग़ैरों की खुश्नूदी हासिल करने के लिये अपने मज़हबी उमूर पर अमल करना तर्क कर दे।

बअ़ज़ कम्पनियों के मालिकान अपने मुस्लिम वरकरों को नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने की इजाज़त नहीं देते, इसी तरह बाज़ ताजिर अपने नौकरों को अहकामे शरअ पर अमल पैरा होने की रूख़सत नहीं देते या ख़िलाफे शरअ कामों की अनजाम दही का हुकम देते हैं और कुछ नादान उन्हें खुश रखने के लिये फ़राइज़ व वाजिबात को पसे पुश्त डाल देते हैं।

ऐसा करना कतअन नाजाइज़ व हराम, बाइसे ग़ज़बे जब्बार और दोज़ख़ में ले जाने वाला अमल है, ऐसी कम्पनियों और दुकानों पर काम करना ही जाइज़ नहीं जहाँ के मालिकान मुसलमानों को नमाज़ न पढ़ने दें, बल्कि मुसलमानों पर वाजिब व ज़रूरी है कि علی توکّل اللہ का मुज़ाहरा करते हुए ऐसी नौकरियों को अपनी जुतियों की नोक से उड़ा दें।

बेग़ैरत मुसलमान: आज दनिया के बेशतर मुल्कों में बहुत से ऐसे बेग़ैरत व बेहया मुसलमान रहते हैं जो ग़ैर मुस्लिमों से सियासी या तिजारती तअ़ल्लुक़ात की बिना पर या दुनियावी मनाफेय के लिये या उनकी दिल जोई के लिये या फिर फ़ैशन व जिद्दत पसंदी के नाम पर उनके साथ मैखानों में शराब पीते, क्लबों और पार्टियों में डांस करते, जुए के अड्डे पर जुआ खेलते, बुत कदों में मुजस्समों के सामने सर

झुकाते और निहायत बे शरमी के माहौल में न जाने क्या क्या करते हैं।

उन्हें अपने ग़ैर मुस्लिम दोस्तों से यह कहते हुए शर्म व हया आती है कि यह चिज़ें हमारे मज़हब में नाजाइज़ व हराम हैं, उन्हों ने ऐसा इस लिये किया कि उनके नज़दीक, रब की रज़ा से बढ़ कर उनके काफिर दोस्तों की रज़ा है, रब तआला भले नाराज हो जाये उनके दोस्त व अहबाब नाराज़ न होने पाएं।

उन्हों ने दुनियावी मनाफिअ को उख़रवी फ़वाइद पर तरजीह दे रखी है, आख़िरत भले ही तबाह व बरबाद हो जाये, लेकिन दुनियावी दौलत हाथ से न जाने पाए, यह उनकी बे ग़ैरती, बे शरमी और इमानी कमज़ोरी की दलील है, इस क़िस्म की मुदाहनत से गुरेज़ करना हर साहिबे इमान पर फर्ज़े ऐन है।

मुदाहनत की दुसरी क़िस्म भी हराम है लिहाज़ा कुफ्फार व मुशरिकीन के ख़ौफ़ व दहशत के सबब अहकाम शरअ को यकसर तर्क करदेना या उनकी अदाइगी में सुस्ती बरतना जायज़ नहीं, अज़ान इस लिये तर्क नहीं की जा सकती कि कुफ्फार इजाज़त नहीं देते, मस्जिद में नमाज का एहतेमाम इस लिये बन्द नहीं हो सकता कि मुशरिकीन रूख़सत नहीं देते, रमज़ान के रोज़े इस लिये नहीं छोड़े जा सकते कि हुकुमते वक़्त परमीशन नहीं देती, मुसलमान जहाँ भी रहें उन पर इस्लामी अहकाम पर अमल करना लाज़िम व ज़रूरी है।

मुदाहनत के बजाए हिजरत करना फर्ज़ है: और जिस मुल्क या शहर में उन्हें खुले आम अपने मज़हब पर अमल करने की इजाज़त न हो, वहाँ मुदाहनत की इजाज़त न होगी, बल्कि उन से बज़ोरे शमशीर अपना

हक़ हासिल करना या वहाँ से हिजरत कर जाना उन पर वाजिब ठहरेगा, अगरचे उन्हें उसके लिये अपनी ज़मीन व जाएदाद और माल व दौलत की कुर्बानी पेश करनी पड़े, क्यों कि हज़रत सैय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि अल्लाह के रसुल हज़रत मुहम्मद ﷺ ने इर्शाद फरमायाः

اَنَا بَرِیْٓءٌ مِّنْ کُلِّ مُسْلِمٍ اَقَامَ مَعَ الْمُشْرِکِیْنَ۔

(السنن لابی داؤد، رقم الحدیث:۲۶۴۵، الجامع للامام ترمذی، رقم الحدیث:۱۶۰۴)

तरजमाः मैं हर उस मुसलमान से बेज़ार व बरी हुँ जो (अहकामे शरा पर अमल करने की इजाज़त न मिलने के बावजूद) मुशरिकीन के साथ इक़ामत करे।

सहाबए किराम की सीरते पाक और उनका तर्ज़े ज़िन्दगी हमारे लिये मशअले राह और संगे मील है, उन नुफूसे कुदसिया ने जांकाह मसाएब व आलाम बरदाशत करना और ज़मीन व जायेदाद की कुर्बानी पेश करना तो गवारा कर लिया मगर काफ़िरों की मुदाहनत गवारा न की, वह कौनसा ज़ुल्म था जिस्की मश्क़ उनपर न की गई हो, वह कौनसा सितम था जिस्का उन्हें शिकार न बनाया गया हो, ऐसे दिल–दोज़ हालात में कुफ़्फ़ारे मक्का की खुश्नूदी हासिल करने के लिये एक लमहे के लिये भी वह इस्लाम से दुर न हुए, बलकि जिस ने भी एक बार "اَللّٰہُ اَحَدٌ" कह दिया वह बार–बार मार खाता रहा और यही कलिमा बुलन्द करता रहा,

इस सिलसिले में अगर हम इस्लामी तारीख़ पर नज़र डालें तो

हमें एक दो नहीं बल्कि कई शहादतें मिलती हैं, बतौरे नमुना के सिर्फ़ दो वाक़ेआत पेशे ख़िदमत हैं, जिन से हम सहाबए किराम के जज़्बए इमान का कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हैं,

<u>हज़रते सुहैब का जज़्बए ईमानः</u> हज़रत सुहैब रूमी को क़बले इस्लाम रूमियों ने जंगी क़ैदी बनाकर बनु कलब के एक शख़्स के हाथ फ़रोख़्त कर दिया था, वह शख़्स उन्हें लेकर मक्का आया और अब्दुल्लाह बिन जदआन ने उन्हें खरीद कर आज़ाद कर दिया, उन्हों ने मक्का ही में रिहाइश इख़्तियार कर ली और तिजारत करने लगे, उनकी तिजारत बड़ी नफ़ा बख़्श साबित हुई और बहुत बड़ी दौलत उनके हाथ आई।

कुछ ही अर्से में वह मक्का मुकर्रमा के रईसों में शुमार होने लगे, जब नबी–ए–अकरम ﷺ ने अपनी नुबुव्वत व रिसालत का एलान फ़रमाया तो आप भी दौलते इमान से मुशर्रफ होकर हुज़ुर ﷺ के गुलामों में शामिल हुए, ज़मानए हिजरत आया तो रसुले अरबी ﷺ और सहाबए किराम के हमराह हिजरत फ़रमाकर मदीना मुनौवरा तशरीफ ले गए।

हज़रते सुहैब मक्का के ताजिर थे, दौलतमन्द थे, उन्हें वहाँ कोई बड़ी तकलीफ न थी, लेकिन इशके रसुल ﷺ से सरशार थे, लिहाज़ा उन्हों ने भी हिजरत करने का फ़ैसला किया।

जब अपने माल व असबाब के साथ मक्का से निकलने लगे तो कुफ्फारे मक्का ने रोक कर कहाः "ऐ सुहैब! तुम हमारे पास कंगाल आए थे, तुम ने यह सारी दौलत हमारे यहाँ कमाई है, हम तुम्हें इस

दौलत को यहाँ से लेजाने न देंगे।

हज़रत सुहैब चाहते तो मुदाहनत करके उन्हें खुश कर देते और अपने लिये राहत व सुकुन के रासते हमवार कर लेते लेकिन उनकी ग़ैरते इमानी ने यह गवारा न किया बल्कि उन्हों ने अहले मक्का से कहा "अगर यह सारा खज़ाना मैं तुमहारे पास छोड़ दुँ तो क्या तुम लोग मुझे अपने महबूब ﷺ के पास जाने दोगे? उन्हों ने कहाः अगर आप अपनी दौलत हमारे सुपुर्द कर दें तो हम आप से कुछ तअ़र्रुज़ (रोक– टोक) न करेंगे।

हज़रत सुहैब रूमी ने अपनी ज़िन्दगी भर की कमाई उनके हवाले की और ख़ाली हाथ हुज़ुर ﷺ के पास मदीना मुनौवरा तशरीफ लाए, जब हुज़ुर ﷺ के दरबारे गुहरबार में हाज़िर होकर सारा वाक़िआ बयान किया तो आक़ाए दोजहाँ ﷺ ने उन्हें मुज़्दए जांफिज़ा सुनाया और उनकी दिल–जोई के लिये अपनी ज़बाने फैज़बार से यह इर्शाद फ़रमायाः

رَبِحَ صُهَيْبٌ رَبِحَ صُهَيْبٌ (البدایہ والنھایہ،ج۳۰،ص:۱۷۴،۱۷۳)

तरजमाः सुहैब ने इस तिजारत में बड़ा नफा उठाया, बड़ा नफ़ा उठाया।

<u>सैय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर की ग़ैरते इमानीः</u> हज़रत सैय्यिदुना इमाम बुखारी ने हज़रते उरवा बिन ज़ुबैर से हज़रत सैय्यिदुना सिद्दीक़े अकबर ﷺ का बड़ा तफ़सीली वाक़िआ रिवायत फ़रमाया है, हदीसे पाक का मफहूम पेशे ख़िदमत हैः

हज़रत सैय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा ने फ़रमायाः जब से मैं ने होश संभाला

मैं ने अपने वालिदैन करीमैन को दीन पर अमल करते हुए पाया और अल्लाह के रसुल ﷺ रोज़ाना सुब्ह व शाम हमारे घर तशरीफ लाया करते थे, जब मुसलमानों को आज़माइश में मुब्तला किया गया और उन्हें मश़के सितम बनाया गया तो मेरे वालिद हज़रत अबु बकर सिद्दीकरضی اللہ عنہहब्शा की जानिब हिज़रत करने की नियत से मक्का से निकले, यहाँ तक कि जब "बर्के गिमाद" नामी बसती पहुँचे तो उसका सरदार इब्ने दग़िना आप से मिला और बोलाः ऐ अबु बकर! आप कहाँ तशरीफ ले जारहे हैं? आप ने फ़रमायाः मेरी क़ौम ने मुझे निकलने पर मजबूर कर दिया है, तो अब मैं चाहता हुँ कि ज़मीन की सैर करूँ और खुल कर अल्लाह की इबादत करूँ।

यह सुन कर इब्ने दग़िना ने कहा "आप जैसा शख्स न निकल सकता है और न ही निकाला जा सकताहै, आप की शान तो यह है कि आप मुहताजों के लिये कमाते हैं, सिला रहमी फ़रमाते हैं, ज़ईफ़ों का बोझ उठाते हैं और हक़ में मसाएब व आलाम आने पर आप मदद करते हैं, सुनिये! मैं आपका मुईन व मददगार हुँ, आप अपने शहर जाकर अपने रब की इबादत करिये।

उसके बाद इब्ने दग़िना हज़रत अबु बकर के साथ मक्का आया और सरदाराने क़ुरैश के साथ ख़ानए काबा का तवाफ़ करने के बाद उन से कहा "अबु बकर जैसी शख्सियतें न निकलती है न निकाली जाती हैं, क्या तुम लोग ऐसे शख़्स को निकाल दोगे जो मुहताजों के लिये कमाता है, सिलए रहमी करता है, ज़ईफों और कमज़ोरों का बोझ उठाता है, मेहमानों की ज़ियाफ़त करता है और हक़ में मसाएब व आलाम आने पर लोगों की मदद करता है?

तो कुरैश ने इब्ने दग़िना की पनाह को कुबुल किया और अबु बकर को पनाह देकर इब्ने दग़िना से कहा "आप अबु बकर से कहें कि यह अपने घर ही में अपने रब की इबादत किया करें, अपने घर ही में नमाज़ें भी पढ़ा करें और घर के अन्दर जिस क़दर चाहें तिलावते कुरआन कर लिया करें, लेकिन अपनी इबादत से न हमें तकलीफ दें और न उसका एलान करें, क्यों कि हमें ख़ौफ है कि यह अपनी पुरसोज़ तिलावत से हमारे बच्चों और हमारी बिवीयों को फ़ितने में मुबतला करदेंगे।

इबने दग़िना ने यह सारी बातें अबु बकर से अर्ज़ कर दी, हज़रत अबु बकर अपने घर में रब तआ़ला की इबादत करने लगे, फिर हज़रत अबु बकर के दिल में यह बात आई कि घर के सहन में एक इबादत–गाह बना ली जाए, चुनानचि इबादत–गाह बनाकर अपने घर के सहन में वह नमाज़ें पढ़ने और क़रआने करीम की तिलावत से महज़ुज़ होने लगे।

जब वह तिलावते कुरआन करते तो मुशरिकीने मक्का की औरतें और उनके बच्चे जमा होकर उन्हे देखते और उनके सोज़ व गुदाज़ और कुरआने करीम की शाने एजाज़ को देख कर वर्तए हैरत में पड़ जाते, हज़रत अबु बकर बहुत ज़ियादा गिरया वज़ारी करने वाले शख़्स थे, जब तिलावते कुरआन करते तो बे क़ाबू होकर अपनी आँखों से आँसुओं के मोती टपकाने लगते।

इस मनज़र से शिर्क के अलमबर्दार सरदाराने कुरैश ख़ौफज़दा हो गए और उन्हों ने इबने दग़िना से कहलवाया कि "हम ने अबु बकर को इस शर्त पर पनाह दी थी कि वह अपने घर में छुप कर अल्लाह की बन्दगी करेंगे, मगर यह तो हद से तज़ावुज कर चुके हैं और अब ये अपने घर

के सहन में मस्जिद बनाकर अलल एलान नमाज़ पढ़ते और तिलावते कुरआन करते हैं, हमें ख़ौफ़ है कि यह हमारी औरतों और बच्चों को फ़ितने में मुबतला कर देंगे, आप उनके पास आकर उन से कहें कि यह अपने घर ही में अपने रब की इबादत करें और अगर इनकार करदें तो आप अपनी पनाह वापस ले लें, क्यों कि न हम आप का अहद तोड़ सकते हैं और न यह बर्दाश्त कर सकते हैं कि अबु बकर खुले आ़म रब की इबादत करें।

हज़रत सैय्यीदतुना आइशा फरमाती हैं "इबने दग़िना हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ के पास आया और उन से कहा आपको अच्छी तरह मालूम है कि हमने किस शर्त पर आपको पनाह दी थी, अब आप या तो उस पर अमल करें या फिर हमारी पनाह को वापस कर दें, क्यों कि मै यह नहीं चाहता कि अहले अ़रब यह सुनें कि मैं ने एक शख़्स को पनाह दी और उस (पनाह) की पर्वाह नहीं की गई।

यह सुनकर हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने (जोशे ईमानी के साथ) जवाब दिया कि मैं तेरी पनाह तुझे वापस करता हुँ और मेरे लिये मेरे रब अल्लाह की पनाह ही काफ़ी व वाफ़ी है।

(الصحیح للامام البخاری باب جوار ابی بکر فی عہد النبی ﷺ وعقدہ رقم الحدیث:۲۲۹۷)

बहर–हाल न ग़ैर मुस्लिमों से मुवालात जायज़ कि उन से क़लबी तअल्लुक़ क़ायम कर के उन्हें अपना हमराज़ बना लिया जाये और न काफिरों की मुदाहनत दुरूस्त कि उनकी रज़ा जोई या उनके ज़ुल्म व सितम से बचने के लिये इस्लामी अहकाम तरक कर दिये जायें।

देखिये हज़रत सिद्दीक़ अकबर और हज़रत सुहैब रूमी ने माल

व दौलत से महरूम होकर मसाएब व आलाम की चक्की में पिस जाना तो गवारा कर लिया, लेकिन काफ़िरों और मुशरिकों की मुदाहनत गवारा न की, लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि शरई हुदूद को पहचानें और उन्हींमें रहकर ग़ैरों से तअल्लुक़ात उस्तुवार करें, शरीअत के दाएरे में रहकर कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन, यहुद व नसारा और कुफ्र के तमाम अ़लम बरदारों से मुआमलात, मुवासात और मदारात की हद तक तअल्लुक़ात क़ायम करें, लेकिन उनके लिये मुवालात व मुदाहनत की तमाम राहें हमेशा के लिये बन्द रखें, इसी में दुनिया व आख़िरत की भलाइयाँ पोशीदह हैं।

अल्लाह तबारक व तआला हम सबको बिल ख़ुसुस हमारे नौजवान इसलामी भाइयों को शरीअत की मुक़र्रर करदा हदों में रहकर दोस्तियां क़ायम करने और ज़िन्दगी के शब व रोज़ गुज़ारने की तौफ़िक़ मरहमत फरमाए! और ता दमे हयात हर तरह के फ़िसक व फुजुर से बचते हुए अपने आक़ा व मौला हुज़ूर रहमते आलम ﷺ की सीरते पाक को अपनी ज़िन्दगी का ओढ़ना बिछौना बनाने की सआ़दत नसीब फ़रमाए! आमीन।

बिजाहे सैय्यिदिल मुरसलीन ﷺ